Orchid

OSR SERIES

धरा

हिंदी व्याकरण

उत्तर पुस्तिका 8

Orchid Publications (P) Ltd.

पाठ 1 भाषा, लिपि,बोली और व्याकरण

(1) (क) भाषा (ख) मौखिक भाषा (ग) लिपि (घ) देवनागरी (ङ) ब्राह्मी

(2) (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓

(3) (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓

(4) (क) कन्नड़ (ख) मलयालम (ग) तमिल (घ) असमिया
(ङ) कोंकणी (च) पंजाबी (छ) हिंदी (ज) बांग्ला

(5) (क) मौखिक (ख) उड़ीसा (ग) तमिलनाडु (घ) बोली (ङ) फ़ारसी
(च) हिंदी (छ) साहित्य (ज) ब्रज भाषा

(6) देवनागरी, फारसी, रोमन, गुरुमुखी, देवनागरी

(7) **भाषाएँ** – मलमालम पंजाबी, सिंधी, उर्दू
बोलियाँ – भोजपुरी, मारवाड़ी, राजस्थानी, गढ़वाली

(8) (क) विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम भाषा कहलाता है। भाषा के दो रूप हैं– मौखिक तथा लिखित।
(ख) भाषा के लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं।
(ग) व्याकरण वह शास्त्र है जिसकी सहायता से हम भाषा को शुद्ध पढ़ने, लिखने तथा बोलने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। भाषा की व्यवस्था को सीखने के लिए व्याकरण का अध्ययन किया जाता है।
(घ) हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है क्योंकि भारतीय संविधान में 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसे भारतीय संघ के काम-काज की भाषा बनाया गया।

पाठ 2 वर्ण विचार

(1) (क) वर्ण उस ध्वनि को कहते हैं जिसके और अधिक खंड नहीं किए जा सकते हैं जैसे- अ, इ, क
(ख) किसी भी भाषा के सभी वर्णो के व्यवस्थित एवं क्रमक समूह को वर्णमाला कहते है।
हिंदी वर्णमाला में 48 वर्ण हैं।
(ग) जिन वर्णो के उच्चारण के दौरान मुख से निकलने वाली वायु बिना किसी रुकावट के बाहर निकल जाती है उन्हें स्वर कहते हैं। जैसे- अ, आ, इ, ई आदि। स्वर की सहायता से बोली जाने वाली वर्ण व्यंजन कहलाते हैं।

(2) (क) अ (ख) स (ग) स

(3) (क) अनुस्वार (ख) अंग्रेजी (ग) आठ (घ) मूर्धा (ङ) तीन (च) छोटी (छ) अक्षर

(4) (क) सही (ख) गलत (ग) गलत (घ) गलत (ङ) सही (च) गलत

(5) (क) नदीश (ख) स्वच्छता (ग) पर्वत (घ) आश्चर्य (ङ) स्वागत

(6) (क) अनुनासिक:- इसका चिह्न (ँ) चंद्रबिंदु है। इसका उच्चारण नाक और मुँह दोनों के सहयोग से किया जाता है। इसे स्वरों से पृथक नही किया जा सकता है। जैसे- आँख, चाँद आदि।?
अनुस्वार- इसका चिह्न (ं) बिंदु है। इसका उच्चारण करते वक्त वायु नाक से निकलती है। इसे स्वरों से पृथक किया जा सकता है। यह अनुनासिक की अपेक्षा तीव्र ध्वनि है जैसे- घंटी, चंचल आदि।
(ख) स्पर्श व्यंजन- जिन व्यजनों के उच्चारण में हमारी जीभ मुख के किसी स्थान का स्पर्श करें, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते है "क" से "म" तक 25 व्यंजन स्पर्श व्यंजन कहे जाते हैं।
(ग) उष्म व्यंजन- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय श्वास मुख्य में से रगड खाकर निकलती है और उष्मा पैदा करती है, वे उष्म व्यंजन कहलाते हैं। श, ष, स, ह उष्म व्यंजन कहलाते हैं।

पाठ 3 संधि

(1) (क) दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं। जैसे अनाथ+आलय- अनायालय, कपि+ईश – कपीश
(ख) स्वर में स्वर के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

(2) (क) सु+अच्छ (ख) पर+उपकार (ग) उत्+ज्वल (घ) रत्न+आकर (ङ) अखिल+ईश
(च) वार्ता+आलाप (छ) राक+ईश (ज) प्रति+एक (झ) यथा+उचित (ञ) योग+अभ्यास

(3) पो + इत्र अयादि संधि, हिम + आलय दीर्घ संधि, दु: + कर्म विसर्ग संधि,
दया + आनंद दीर्घ संधि, सदा + एव वृद्धि संधि, पर्वत + आकार दीर्घ संधि
उत्तर + आंचल दीर्घ संधि, अति + अधिक यण संधि नि: + धन विसर्ग संधि
लोक + ईश गुण संधि, अत + एव वृद्धि संधि

(4) **विसर्ग संधि** – निर्जर, नमस्ते, निरोग, निस्सहाय,
व्यंजन संधि – तद्भव, सज्जन, उद्धरण, संतोष

(5) (क) व्यंजन संधि – व्यंजन वर्ण के बाद स्वर अथवा व्यंजन आने से व्यंजन में जो परिर्वतन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
जैसे:– सत् + चरित्र – सच्चरित्र, जगत् + ईश– जगदीश
विसर्ग संधि– विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग के स्थान पर जो विकार होता हैं, उसे विसर्ग संधि कहते है। तप: + बल – तपोबल, मन: + रथ – मनोरथ

(ख) स्वर संधि के पाँच भेद है:–

i. दीर्घ संधि – सूर्य + अस्त – सूर्यास्त, सती + ईश– सतीश
ii. गुण संधि – देव + इंद्र – देवेंद्र, उमा + ईश– उमेश
iii. वृद्धि संधि – महा : औषध – महौषध, यथा + एव– यथैव
iv. यण संधि – इति + आदि – इत्यादि, सु + अल्प– स्वल्प
v. अयादि संधि – पो + अन – पवन, गै + अक – गायक

(ग) संधि के तीन भेद हैं– स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।

(1) स्वर संधि – दो स्वरो के आपस में मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते है ।
जैसे – सूर्य + अस्त = सूर्यास्त स्व + अर्थ = **स्वार्थ**

(2) व्यंजन संधि – व्यंजन वर्ण के बाद स्वर अथवा व्यंजन आने से व्यंजन में जो परिर्वतन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे उत् + नति = उन्नति वि + छेद = विच्छेद

(3) विसर्ग संधि – विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग के स्थान पर जो विकार होता हैं, उसे विसर्ग संधि कहते है। तप: + बल = तपोबल, मन: + रथ = मनोरथ

भाषा खेल

हिमालय	गणेश
हिम + आलय	गण + ईश
विद्यार्थी	सूर्योदय
विद्या+अर्थी	सूर्य + उदय
गायक	रामायण
गै +अक	राम + अयन

पाठ 4 शब्द विचार

(1) (क) शब्द– वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। जैसे– कलश, घर, गुलाब आदि।

(ख) अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं।

i. सार्थक शब्द:– ऐसे शब्द जिनका कोई अर्थ हो जैसे– गुलाब, कलश आदि।
ii. निरर्थक शब्द:– ऐसे शब्द जिनका कोई अर्थ न निकलता हो जैसे–शलक, वाय, नीपा आदि।

(2)

कपोत	दंत
गृह	आम्र
वाष्प	भ्रमर
घृत	कूप

(3) जूता, लोटा, घेरा, गाड़ी, भैंस

(4) **रूढ़ शब्द** – भारत, दीवार, जीव, स्नेह, देश, वायु, पुस्तक, पुत्र, भोजन
यौगिक शब्द – चायवाला, राजदूत, निर्धन, प्रतिदिन, महेश, पुस्तकालय, निम्नलिखित, प्रतिहिंसा, प्रह्लाद, दुस्साहा, महारानी, आजकल, चिड़ियाघर
योगरूढ़ शब्द – नीलकंठ, विषधर, त्रिलोचन, गजानन, चतुर्भुज, महावीर, मेघनाद

(5) (क) उत्पत्ति एंव बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं–

i. रूढ़ शब्द:– ऐसे शब्द जो परंपरा से किसी वस्तु विशेष के अर्थ को प्रकट करते हैं रूढ़ शब्द कहलाते हैं।

शब्दों के यदि टुकड़े किए जाएँ तो अर्थ नहीं निकलते जैसे:– गाय, कलम, हाथी आदि।

ii. यौगिक शब्द:– जब दो या दो से अधिक शब्द या शब्दांश मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं तो वह यौगिक शब्द कहलाते हैं जैसे– पुस्तक+आलय– पुस्तकालय, प्रधान+मंत्री– प्रधानमंत्री

iii योगरूढ़ शब्द:– जो शब्द यौगिक होते हुए भी सामान्य अर्थ के सथान पर विशेष अर्थ देते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं जैसे– पंक+ज–पंकज, (कीचड़ में जन्म लेने वाला अर्थात कमल) दश+आनन– दशानन (दस मुख वाला अर्थात रावण)

(ख) प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ भेद हैं :–

i. संज्ञा ii. सर्वनाम iii. क्रिया iv. विशेषण v. क्रियाविशेषण

vi. संबंधबोधक vii. समुच्चयबोधाक viii. विस्मयादिबोधक

(ग) तत्सम शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए हैं जैसे सत्य, सूर्य, गुरु आदि तद्भव शब्द भी संस्कृत से आए हैं परंतु इनका रूप परिवर्तित हो गया है जैसे– सच, सूरज, घी आदि।

पाठ 5 समास

(1) (क) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं। जैसे:– रसोई के लिए घर– रसोईघर घोड़े पर सवार– घुड़सवार

(ख) संधि में वर्णों का मेल होता है जबकि समास में पदों का। जैसे–लंबा–उदर –लंबोदर (संधि) पवन का पुत्र – पवनपुत्र (समास)

(2)

तत्पुरुष	द्वंद्व
द्विगु	बहुव्रीहि
द्विगु	अव्ययीभाव
अव्ययीभाव	द्विगु
बहुव्रीहि	द्वंद्व

(3) (क) मैंने चौराहा पार किया। (ख) उसने देशभक्ति दिखाई। (ग) यथाभक्ति काम कीजिए। (घ) वह मुझे प्राण प्रिय है। (ङ) नेहा चंद्रमुखी है।

(4) (क) नौ रत्नों का समूह – द्विगु

(ख) देश के लिए प्रेय – तत्पुरुष

(ग) देह रूपी लता – कर्मधारय

(घ) सौ शब्दों (वर्ष) का समूह – द्विगु

(ङ) बिना हिचक के – अव्ययीभाव

(5) लाभ – हानि, दोपहर, यश प्राप्त, गुरू दक्षिणा, नेत्रहीन, कार्य कुशलता

(6) (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓

(7) रात, दिन ख. यथ, शक्ति ग. रसोई, घर घ. राजा पुरुष

(8) (क) लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश, लंबा है जो उदर

(ख) दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण, दस आनन वाला है जो

(ग) नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव, नीला है जो कंठ

(घ) पीला है वस्त्र जिसका अर्थात् श्री कृष्ण पीला है जो वस्त्र

(9) (क) समास के चार भेद होते हैं–

i. अव्ययीभाव समास:– प्रतिदिन – हर दिन, बेशक– बिना शक के

ii. तत्पुरुष समास:– जैसे कार्य में कुशल – कार्यकुशल

iii. द्वंद्व समास:– रात–दिन – रात और दिन, राधा–कृष्ण राधा और कृष्ण

iv. बहुब्रीहि समास:- लंबोदर - लंबा है उदर जिसका, पीतांबर:- पीले हैं अंबर जिसके अर्थात विष्णु

(ख) कर्मधारय समास के दोनों पक्षों में उपयेय-उपमान या विशेषण-विशेष्य का सबंध होता जबकि, बहुव्रीहि समास के दोनो पद गोण होते हैं। इसका तीसरा पद प्रमुख होता है।

उदाहरण - पीतांबर-पीत (विशेषण) है जो अबंर (विशेष्य)-कर्मधारय पीतांबर - पीत हैं अंबर जिसकेयानी विष्णु-बहुव्रीहि

पाठ 6 उपसर्ग

(1) (क) वि+आ (ख) दुष् (ग) दुः (घ) उत् (ङ) स्वयं

(2) (क) अधोगति, अधोवस्त्र (ख) अपमान, अपयश (ग) आजीवन, आजन्म (घ) अनुराग, अनुशासन (ङ) प्रतिदिन, प्रतिकूल (च) हरदम, हररोज (छ) सहयोग, सहकारी (ज) उतम, उत्कृष्ट

(3)

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
प्रतिदिन	प्रति	दिन	सहोदर	सह	उदर
अनावश्यक	अन	आवश्यक	सुशिक्षित	सु	शिक्षित
संकल्प	सम्	कल्प	गैर-जिम्मेदार	गैर	जिम्मेदार
निर्गुण	निर्	गुण	बेईमान	बे	ईमान

(4) अन, सम्, सु, स्वयं, सह, अध, कु, बे, ला, चिर

(5) ऐसे शब्द या शब्दांश जो किसी शब्द से पहले लगकर, उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते है। जैसे- वि + देश - विदेश, उप + कार - उपकार, दुर् + बल - दुर्बल

पाठ 7 प्रत्यय

(1) (क) अक (ख) दार +ई (ग) इकता (घ) जीव +ई (ड़) ईयता

(2) (क) कर्तृवाचक (ख) भाववाचक (ग) कर्मवाचक (घ) कर्तृवाचक

(3) (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

(4) (क) लिखा हुआ, पढ़ा हुआ (ख) मक्खन, कटौती (ग) लिखाई, बनावट (घ) सोना, बहाव (ङ) मामी, नौकरानी (च) बंगाली, जयपुरिया (छ) भूखा, दयालु (ज) लुटिया, डिबिया

(5)

	शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द
क.	शार्मिदा	इंदा	शर्म
ख.	खटास	आस	खट्टा
ग.	गाड़ीवान	वान	गाड़ी
घ.	घुमक्कड़	अक्कड़	घुम

(7) लेख + अक - लेखक, हर्व + इत - हर्षित, घूम + अक्कड़ - घुमक्कड़
समाज + इक - समाजिक, खजाना + ची - खजानची, इज्जत + दार - इज्जतदार

(8) (क) जुर्माना, बुदबुदाना (ख) मोरनी, शेरनी (ग) दर्दनाक, शर्मनाक
(घ) दयालु, ईर्षालु (ड़) इंसानियत, हैवानियत

(9) (क) ऐसे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे- लिख + आवट - लिखावट, कृपा + आलु - कृपालु

(ख) उपसर्ग और प्रत्यय-

समानता- दोनों का प्रयोग नए शब्दों के निर्माण के लिए किया जाता है।

अंतर- उपसर्ग का प्रयोग शब्दों का आरंभ में किया जाता है जबकि प्रत्यय का शब्दों केअंत में।

जैसे:- अपमान शब्दों में ' अप उपसर्ग है। मानवता शब्द में 'ता' प्रत्यय है।

(ग) **कृत प्रत्यय**- ऐसे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप के साथ लगकर संज्ञा और विशेषण शब्दोंका निर्माण करते है, उन्हे कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे- बुन क्रिया शब्द हैं इसके अंत में 'आवट' जुड़ने से बुनावट शब्द का निर्माण होता है। 'आवट' कृत प्रत्यय है।

तद्धित प्रत्यय- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे- अपना+पन - अपनापन, मीठा+आस - मिठास

भाषा-खेल

साली, वीरता, चुहिया, दुकानदार, रंगीन, तैराक, पढ़ाना, हँसी, खंडन, सपेरा

पाठ 8 संज्ञा

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा- होली, प्रह्लाद, होलिका, हिरण्यकश्यप
जातिवाचक संज्ञा- पर्व, कहानी, पिता, असुर, कहानी, बालक
भाववाचक संज्ञा- नास्तिक, आस्तिक, ईश्वर-भक्ति, सुरक्षित

(2) जातिवाचक संज्ञा- समाचार पत्र, विज्ञापन, रेडियों, टेलीविजन, पदार्थ,
भाववाचक- उपयोगी, लोकप्रियता

(3) (क) गरमी (ख) ममत्व (ग) मुस्कुराहट (घ) मोटापा (ड़) बहाव (च) खाने-पीने (छ) घबराहट
(ज) औचित्य (झ) भाग दौड़

(4) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**- राजगोपाल, ईटानगर, भगत सिंह, अमेरिका, नेहा, अरहर
जातिवाचक संज्ञा- कक्षा, पहाड़, मानव, पुस्तक, बूढ़ा, पंडित
भाववाचक संज्ञा- माधुर्य स्वास्थ्य, अहंकार, निकटता, दूरी, शत्रुता

(5) प्राणीवाचक- किसान, कुत्ता, विद्यार्थी, गाय
अप्राणीवाचक-कक्षा, पुस्तक, मेज, टोपी

(6) (क) लाल बहादुर शास्त्र बहुत अच्छे नेता थे। (ख) गाँधी जी के नेतृत्व में भारत स्वतंत्र हुआ।
(ग) आत्मा अमर है। (घ) अच्छे कर्म करने से व्यक्ति अमरत्व प्राप्त करता है।
(ङ) परिश्रमी पुरुष सदा सफल होता है।

(7) (क) जिस शब्द से किसी वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम का बोध होता है, उसे संज्ञा कहते हैं।
जैसे- आयुष, साहिल, पक्षी, किसान

(ख) संज्ञा के तीन भेद है।-

i. व्यक्तिवाचक संज्ञा - रामायण, गीता, मदर टेरेसा आदि।
ii. जातिवाचक संज्ञा - गाय, नदी, लड़के आदि।
iii. भाववाचक संज्ञा- मिठास, शत्रुता, कड़वाहट आदि।

(ग) ऐसे शब्द जो किसी विशेष वस्तु व्यक्ति या स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है। जैसे- जवाहर लाल नेहरू, रामायण, गेटवे ऑफ इंडिया आदि।
जातिवाचक संज्ञा - जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार के या एक जैसे समस्त प्रणियों, व्यक्तियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- गाय, नदी लड़कियाँ, लड़के आदि।

(घ) भाववाचक संज्ञा-जिस संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण-दोष, भाव-दशा, अवस्था, स्वभाव आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-मिठास, शत्रुता, कड़वाहट बुढ़ापा, बचपन, यौवन आदि।

पाठ 9 संज्ञा के विकारक

(1) पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग

(2) चुहिया, यशस्विनी, ब्राह्मणी, शिष्या, ज्ञानवती, सिंहनी, विधवा, क्षत्रणी, कवयित्री, किशोरी, नौकरानी, बेगम पाठिका, नानी, कर्त्री, बबुआइन, परिचायिका, लेखिका

(3) (क) मालिन (ख) चाचा (ग) नौकर (घ) मोर (ड़) धोबिन

(4) (क) देवरानी (ख) विदुषियाँ (ग) अभिनेत्री (घ) दादी, चाची, मामी

(5) **पुल्लिंग**- सोमवार, गेंहूँ, दूध, सूर्य **स्त्रीलिंग**- गंगा, जूही, रोटी, उँगली

(6) आइन– हलवाई, बबुआइन, पंडाइन, चौबाइन
इया– चुहिया, बिटिया, बंदरिया, चिड़िया
इका– नायिका, पुस्तिका, लेखिका, गायिका

(7) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ (च) ✗ (ग) ✓ (छ) ✗

(8) (क) स्त्रीलिंग – सदा दूसरों की भलाई करनी चाहिए। (ख) पुल्लिग– मोटापा स्वास्थ्य का दुश्मन होता है।
(ग) पुल्लिग– मोर नाच रहा है। (घ) स्त्रीलिंग – चिड़िया आकाश में उड़ती है।
(ङ) स्त्रीलिंग – सदा दूसरों की भलाई करनी चाहिए।

(9) (क) पुरुष या स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं।

(ख) हिंदी में लिंग के दो भेंद होते है– पुल्लिग– जिस शब्द से किसी प्राणी वस्तु अथवा भाव के पुरुष जाति में होने का बोध होता हैं, उसे पुल्लिग कहते हैं जैसे– सूर्य, शिक्षक, मोर
स्त्रीलिंग– जिस शब्द से किसी प्राणी, वस्तु अथवा भाव के स्त्री होने का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे:– गंगा, मोरनी, अलमारी, कॉपी आदि

(ग) (i) नदियों और झीलों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते है, जैसे– गंगा, यमुना, कावेरी आदि
(ii) बेलों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे– जूही, चमेली, मल्लिका आदि।
(iii) भोजन तथा मसालों के कुछ नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे– पूरी, रोटी, जलेबी आदि।
(iv) तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे– प्रथमा, तृतीय, एकादशी आदि।

वचन

(1) (क) प्राण (ख) आँसू (ग) दर्शन (घ) हस्ताक्षर

(2) केले, सड़कें, कमीजें, रानियाँ, पुस्तकें, बहुए, वृद्धों, जलेबियाँ

(3) बहुवचन– नदियाँ, हिरन जाते हैं, तोते, दर्शन, प्राण
एकवचन– बालक, बेटे ने, खरगोश ने, आकाश, पानी,

(4) (क) उल्लू अंधेरे में नहीं देख सकते हैं। (ख) वहाँ गुड़ियाँ बिकती हैं। (ग) नदियों में पानी हैं।
(घ) नानियों ने कहानी सुनाई। (ड़) स्त्रियों ने गाना गाया।

(5) **सदा एकवचन**– चाँदी, डर, संसद, लोहा **सदा बहुवचन**– समाचार, आँसू, बाल, लोग

(6) (क) सहायता (ख) होश (ग) अध्यापिकाएँ (घ) देवताओं (ङ) गुरु (च) गुफाएँ

(7) (क) कमरा साफ कर दो।, हमारे घर में चार कमरे हैं।
(ख) भैंसें दूध देती हैं।, भैंसें चारा खा रही है।
(ग) भक्त ईश्वर की पूजा करता है। भक्तजन कीर्तन कर रहे हैं।
(घ) राक्षस गुफा में रहता है। हम अजंता की गुफाओं को देखने गए।

(8) मुनि, सिपाही, मित्र, भाई, सज्जन, बाबू

(9) (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है उसे वचन कहते हैं। जैसे–
एकवचन– बच्चा, स्त्री, मछली **बहुवचन**– बच्चे, स्त्रियाँ, मछलियाँ

(ख) हिंदी में वचन के दो भेद हैं।–
i. एकवचन– बच्चा, स्त्री, मछली ii. बहुवचन– बच्चे, स्त्रियाँ, मछलियाँ
संस्कृत में वचन के तीन भेद हैं–
i. एकवचन– बाल:, कुक्कुर:
ii. द्विवचन– बालौ, कुक्कुरौ
iii. बहुवचन– बाला:, कुक्कुरा:

(ग) वचन की पहचान की दो विधियाँ है:–
i. संज्ञा और सर्वनाम के द्वारा

एकवचन– नेहा का भाई आया, अंजु ने कॉपी खरीदी, उसने कॉपियाँ खरीदी

बहुवचन– नेहा ने भाइयों को राखी बाँधी।, उसने पढ़ने के लिए कॉपियाँ खरीदी। उन्होंनें कॉपियाँ खरीदी।

ii. क्रिया शब्दों द्वारा–

एकवचन–फूल सुंदर है।, आम मीठा है।, छात्र पढ़ रहा है।

बहुवचन–फूल सुंदर हैं।, आम मीठे हैं।, छात्र पढ़ रहे हैं।

(घ) जिन शब्दों का बहुवचन नहीं बनता है– चाचा, मामा, बाल, आँसू, रोग आदि।

उसके तीन चाचा हैं। (शुद्ध) उसके तीन चाचे हैं। (अशुद्ध)

कारक

(1) (क) कर्म (ख) अपादान (ग) संबंध (घ) संबोधन (ङ) कर्ता
(च) संप्रदान (छ) करण (ज) अधिकरण

(2) (क) कर्ता (ख) कर्म (ग) संबंध (घ) अपादान (ङ) अधिकरण (च) करण

(3) (क) की (ख) को (ग) से (घ) में

(4) (क) करण कारक (ख) करण कारक (ग) अपादान कारक (घ) अपादान कारक (ड़) अपादान कारक

(5) (क) कर्म (ख) संप्रदान (ग) सप्रंदान (घ) संप्रदान (ङ) कर्म

(6) (क) हमने तुम्हें बोला था। (ख) शरीर के कई अंग होते हैं। (ग) राम को उससे मिलने जाना चाहिए था।
(घ) मुझे किसी की चिंता नहीं । (ङ) हमने तुम्हें बोला था। (च) राम को उससे मिलने जाना चाहिए।
(छ) रजत छत पर खेलता है। (ज.) शंकर ने संतोष की साँस ली।

(7) कर्ता – ने, अपादान – से, कर्म – को, संबंध – का, की, के, संप्रदान – के लिए

(8) (क) अपादान (ख) संबोधान (ग) कर्ता (घ) करण (ङ) अधिकरण

(9) (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया या वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। जैसे– नेहा ने आयुष को राखी बाँधी।
उपर दिए गये वाक्य में 'ने' और 'को' कारक चिह्न है।

(ख) i. कर्ता कारक, ii. कर्म कारक, iii.करण कारक, iv.संप्रदान कारक, v.अपादान कारक, vi.संबंध कारक, vii.अधिकरण कारक, viii.संबोधन कारक

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु या पदार्थ का दूसरी वस्तु का पदार्थ से संबंध का बोध होता हो। उसे संबंध कारक कहते हैं। जैसे–यह मीरा का घर है।

(घ) करण तथा अपादान दोनों कारकों में 'से' विभक्ति का प्रयोग होता है। परंतु दोनों में अर्थ की दृष्टि से भिन्नता है। करण कारक में 'से' क्या प्रयोग जहाँ साधन के रूप में होता है, नहीं अपादान कारक में 'अलगाव' या पृथकता के रूप में होता है।

पाठ 10 सर्वनाम

(1) (क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर आते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे मैं, तुम, वह, कुछ, क्या आदि।

(ख) सर्वनाम के छः भेद है–

i. पुरुषवाचक सर्वनामः– मै विद्यालय जाऊँगा।, तुम कहाँ हो?

ii. निश्चयवाचक सर्वनामः– यह घर मेरा है।, वह पुस्तक तुम्हारी है।

iii. अनिश्चयवाचक सर्वनामः– दरवाजे पर कोई खड़ा है।, दूध में कुछ पड़ा है।

iv. संबंधवाचक सर्वनामः– जो करेगा, सो भरेगा।, जैसी करनी, वैसी भरनी।,

v. प्रश्नवाचक सर्वनामः– बाहर कौन खड़ा है?, तुम क्या कर रहे हो?, तुम्हारा क्या नाम है?

vi. निजवाचक सर्वनामः– आयुष गृहकार्य स्वयं करता है।, माँ, मैं अपना काम अपने आप करुँगा।

(2) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ)✓ (ङ) ✓

(3) (क) निजवाचक सर्वनाम (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष) (ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम (ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम

(4) अनिश्चयवाचक सर्वनाम– कोई, कुछ
प्रश्नवाचक सर्वनाम– किसने, कौन
प्रश्नवाचकसर्वनाम– मैं, तुम

(5) (क) पुरुषवाचक सर्वनाम – कहने वाले, लिखने वाले, सुनने वाले, पढ़ने वाले या किसी तीसरे (अन्य) व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनामों को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इनको तीन भेद होते है।

i. उत्तम पुरुष:– मेरी पुस्तक मुझे दे दो।, हम कल जयपुर जायेंगे।,

ii. मध्यम पुरुष:– तुम्हारा पत्र आया है।, आप कब आए।,

iii. अन्य पुरुष:– वह आज बीमार है।, उन्होंने खाना खा लिया है।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम दूर या पास की किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करता है। जैसे–मेरा घर यह है।, वह कॉपी तुम्हारी है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम निश्चयपूर्वक किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत नहीं करते। जैसे– दूध में कुछ पड़ा है।, दरवाजे पर कोई खड़ा है।

पाठ 11 विशेषण

(1) (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषताएँ बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे– सच्चा, लाल सुंदर बाग में सुंदर फूल खिले हैं। इस वाक्य में सुंदर शब्द फूल की विशेषता बता रहा है।

(ख) विशेषण के चार भेंद हैं–

i. गुणवाचक विशेषण:– सेब मीठा है।, आकाश में काले बादल हैं।

ii. संख्यावाचक विशेषण:– दो चिड़ियाँ दाना चुग रही हैं।, कक्षा में तीस विद्यार्थी हैं।

iii. परिमाणवाचक:– एक लीटर दूध ले आओ।, यह दो मीटर कपड़ा है।,

iv. सार्वनामिक विशेषण:– यह घर राहुल का है।, वह आदमी बीमार है।

(2) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓(च) ✓(छ) ✓(ज) ✓ (झ) ✗

(3)

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
लघु	लघुतर	लघुतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
शीघ्र	शीघ्रतर	शीघ्रतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निकट	निकटतर	निकटतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम

(4) दो लीटर – दूध, ऊँचा – पहाड़, काले – बाल, अधिक – लोग, कमजोर – आदमी, सुहाना – दिन

(5) जोशीला, भूखा, अंकित, स्थानीय, प्यासा, वैदिक, गुणवान, बलशाली, मुखरित, नैतिक, पंजाबी, कँटीला, वार्षिक, बुद्धिमान, पुष्पित, चमकीला, स्वर्णिम, पर्वतीय

(6) (क) सर्वनाम (ख) सार्वनामिक विशेषण (ग) सर्वनाम
(घ) सार्वनामिक विशेषण (ङ) सार्वनामिक विशेषण

(क) बुखार – बहुत तेज (ख) मीठा – बहुत (ग) मोटा – पहले से अधिक (घ) दुखी – अत्यंत
(ङ) आवाज – बड़ी धीमी

8) क. नीला– आकाश का रंग नीला है। ख. मोटा– मेरा मित्र मोटा है।
ग. पाँचवी– रमेश पाँचवी कक्षा का छात्र है। घ. भूखा– भिखारी भूखा है।
ङ रोगी– डॉक्टर रोगी का इलाज करता है। च. लाल– गुलाब के फूल का रंग लाल है।
ज. चालू– सुरेश चालू किस्म का लड़का है।
छ. अंतिम– कल मैं राम के पिता की अंतिम यात्रा में गया।
झ. दैनिक– हिंदुस्तान दैनिक समाचार पत्र है। ञ. पूज्य– माता पिता हमारे लिए पूज्य हैं।

(9) (क) विशेषण संज्ञा का सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द होते हैं, जब विशेष्य संज्ञा या सर्वनाम को ही कहते हैं जिनकी विशेष्य विशेषता बताते हैं।

(ख) जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। जैसे– रमा बहुत सुंदर है। 'बहुत' प्रविशेषण है।

पाठ 12 क्रिया

(1) (क) जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चले, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं।
जैसे– राम लिखता है।, लड़की स्कूल जा रही है।

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद है–

i. अकर्मक क्रिया ii. सकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया:– जिस क्रिया के कार्य का फल कर्ता पर पड़ता है। उसे अकर्मक क्रिया कहते है।
जैसे– गगन सो रहा है।

सकर्मक क्रिया– जब क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, तब सकर्मक क्रिया होती है। जैसे– नीता आम खा रही है। तोता मिर्च खा रहा है।

(2) (क) ब (ख) ब (ग) ब (घ) स (ङ) ब

(3)

सकर्मक	**अकर्मक**	**पेरणार्थक**
चलाना	.....	चलना
.....	जाता है	.....
.....	खेलती है	.....
सुलाती	.....	.....
नचाता	.....	.....
बजाती	.....	.....
चलाना	.....	चलवा

(4) क. पर्वकालिक ख. पूर्वकालिक ग. नामधातु घ. संयुक्त क्रिया
ङ सामान्य क्रिया च. सामान्य क्रिया छ. प्रेरणार्थक क्रिया ज. प्रेरणार्थक क्रिया

(5) (क) जागना – जगाना (ख) पढ़ना – पढ़ाना (ग) सोचना – सोचवाना (घ) नापना – नपाना
(ङ) पहनना – पहनाना (च) तोड़ना – तुड़वाना

(5) फूल – तोड़ना, पत्र – लिखना, गेहूँ – काटना, कपड़े – धोना, रोटी – बेलना, दाल – पकाना ढोल – बजाना

(7) (क) जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उस कार्य करने की प्रेरणा देता है, तब वह क्रिया प्रेरणार्थक होती हैं। जैसे – नानी धेवती से कहानी पढ़वाती है।

(ख) मुख्य क्रिया से पहले प्रयुक्त होने वाली दूसरी क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे– गीता गीत गाकर बैठ गई।

पाठ 13 काल

(1) (क) क्रिया के जिस रूप से उसके संपन्न होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।, जैसे– दीपावली हिदुओं का प्रसिद्ध त्योहार है (चल रहा समय), रावण बहुत अत्याचारी था (बीता हुआ समय), कल हम मेला देखने जाएँगे। (आने वाला समय)

(ख) काल के तीन भेद हैं:–

i. भूतकाल:– (बीता हुआ समय) कार चल रही थी।, कल मैं पुस्तकें खरीदने गया।

ii. वर्तमान काल:– (चल रहा समय) राहुल खाना खाता है।, रमेश पढ़ रहा है।

iii. भविष्यत् काल:– (आने वाला समय) कल हम जयपुर जाएँगे।, महेश कल आएगा।

(2)

	काल	भेद
(क)	भविष्यत काल	संभाव्य
(ख)	भूतकाल	संदिग्ध
(ग)	भविष्यत काल	सामान्य
(घ)	वर्तमान काल	अपूर्ण
(ड़)	भविष्यत काल	सामान्य
(च)	भूतकाल	पूर्ण
(छ)	भविष्यत काल	संभाव्य
(ज)	वर्तमान काल	अपूर्ण
(झ)	भविष्यत काल	सामान्य

(3) (क) माँ ने खाना बनाया था। (ख) हमारे घर पूजा हो रही है।

(ग) आयुष मेला देखेगा। (घ) शायद आज वह अजमेर जाए।

(ङ) मैंने भोजन किया था। (च) अंजु नई साड़ी पहन चुकी होगी।

(छ) किसान हल चला रहा था।

(4) भूत काल– सोचा, लिखा, सो रही थी वर्तमान काल– जा रहा है, रो रही है, पढ़ रहे हैं

भविष्यत काल– खाएगा, नाचेगी, खेलेंगे

(5) (क) भूतकाल के छः भेद हैं:–

i. सामान्य भूतकाल:– माँ ने तरबूज काटा।, अध्धयापक ने पाठ पढ़ाया।

ii. आसन्न भूतकाल:– सुरेश ने गीत गाया है।, उसने पत्र लिखा।

iii. पूर्ण भूतकाल:– आयुश विदेश गया था।, मीना ने खाना बनाया था।

iv. अपूर्ण भूतकाल:– महेश खेल रहा था।, किसान फसल काट रहे थे।

v. संदिग्ध भूतकाल:– शायद वर्षा हुई होगी।, गाड़ी चली गई होगी।

vi. हेतुहेतुमद् भुतकाल:– यदि परिश्रम करते, तो अवश्य सफल हो जाते। आप बुलाते तो मैं भी चल पड़ता।

(ख) वर्तमान काल – रमन जाता है। रजनी गाना गा रही है।
भविष्यत् काल – दादा जी कल दिल्ली जाएँगें।
शायद कल उसका पत्र मिल जाए।

पाठ 14 वाच्य

(1) क्रिया का वह विधान जिससे यह जाना जाता है कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है या कर्म है, या भाव है, वाच्य कहलाता है जैसे– नेहा खाना खा रही है। (कर्ता मुख्य)श्याम से पुस्तक पढ़ी गई। (कर्म मुख्य) राम से चला नही जाता।(भाव मुख्य)

(ख) वाच्य के तीन भेद है।–

i. कर्तृवाच्य– आयुष पुस्तक पढ़ रहा हैं।, नेहा खाना खा रही हैं।,

ii. कर्मवाच्य– राधा द्वारा गीत गाया जा रहा है।, मोहन से पुस्तक पढ़ी गई।

iii. भाववाचय– पिता जी से चला नही जाता।, माधव से गया नहीं जाता ।

(2) (क) स (ख) अ (ग) ब

(3) (क) भाववाच्य की क्रिया सदैव एकवचन तथा पुल्लिंग में होती है।

(ख) कर्मवाच्य में कर्म के लिंग वचन के अनुरूप होती है।

(4) (क) राजेश से दूध नहीं पिया जा रहा है। (ख) रमा द्वारा दूध पिया जा रहा है।
(ग) कुणाल द्वारा चित्र बनाया जा रहा है। (घ) प्रणव द्वारा चित्र बनाया जा रहा है।
(ङ) सौरभ द्वारा क्रिकेट खेला जा रहा है। (च) कौआ द्वारा पानी पिया जा रहा है।
(छ) अशोक से पुस्तक पढ़ी जाती है।

(5) (क) कर्मवाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) भाववाच्य (घ) भाववाच्य (ङ) भाववाच्य (च) भाववाच्य (छ) भाववाच्य (ज) कर्तृवाच्य

(6) (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य (घ) लिंग, वचन (ङ) सकर्मक

(7) (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) कर्तृवाच्य (घ) कर्मवाच्य (ङ) भाववाच्य (च) भाववाच्य

(8) (क) जिस वाक्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्म होता है, वहॉ कर्मवाच्य होता हैं। जैसे– मोहन से पुस्तक पढ़ी गई।, राधा द्वारा गीत गाया जा रहा हैं।

जब वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता और कर्म के लिंग, वचन के अनुसार नहीं होता हैं, तो उसे भाववाच्य कहते हैं जैसे– वृद्ध से चला नहीं जाता।, नूतन से गाया नही जाता है

(ख) जब वाक्य में क्रिया कार्य प्रयोग का कर्ता और कर्म के लिंग, वचन, के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होता है, तो उसे भाववाच्य कहते हैं। जैसे– उससे बैठा नही जाता।, राम से चला नहीं जाता।

पाठ 15 अविकारी शब्द

क्रियाविशेषण

(1) (क) इधर–उधर

(2) (ख) प्रतिदिन

(3) (क) अधिक

(4) (क) लगातार

(5) (क) शीघ्र – रीतिवाचक (ख) चारो ओर – स्थानवाचक (ग) धीरे–धीरे – रीतिवाचक
(घ) अच्छा – रीतिवाचक (ड़) कम – परिमाणवाचक (च) बहुत मधुर – रीतिवाचक

(6) (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✗ (छ) ✓

(7) (क) राधा अधिक खाती हैं। (ख) कार शीघ्र चलाओ। (ग) हमें प्रतिदिन स्नान करना चाहिए।
(घ) चुपचाप खड़े रहो। (ङ) बच्चे और बूढ़े थोड़ा खाते हैं।

(8) (क) जो क्रिया के स्थान, काल, रीति, परिमाण संबंधी विशेषताएँ बताते हैं, उन्हे क्रियाविशेषण कहते हैं।
जैसे- तोता पेड़ पर बैठा है (स्थान), मोहन धीरे-धीरे चल रहा है (रीति)
(ख) क्रियाविशेषण के चार भेद है :-

i. स्थानवाचक क्रियाविशेषण- बंदर पेड़ के ऊपर बैठा है।

ii. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- मैने बहुत खा लिया।

iii. कालवाचक क्रियाविशेषण- दो घंटे से लगातार वर्षा हो रही है।

iv रीतिवाचक क्रियाविशेषण- बच्चे ध्यान पूर्वक पढ़ रहे हैं।

(ग) जब शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं तो उसे विशेषण कहते हैं।
यदि यही शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं तो उसे क्रियाविशेषण कहते हैं।

संबंधबोधक

(1) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

(2) (क) की ओर (ख) के साथ (ग) सामने (घ) के द्वारा (ङ) के सामने

(3) (क) जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। जैसे- मेरे घर <u>के सामने</u> बगीचा है।, मेज <u>के नीचे</u> बिल्ली बैठी है।
(ख) यदि अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं तो वे क्रियाविशेषण अव्यय कहलाते हैं। यदि यही शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध स्पष्ट करें तो संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक

(1) (क) ब (ख) स (ग) अ

(2) (क) राम, मोहन और सोहन कल आएँगे।
(ख) तुम पढ़ो अथवा सो जाओ।
(ग) वह सदा सच बोलता है मानो सत्यवादी हरीशचंद्र हो।
(घ) उसने मुझे बुलाया है लेकिन मैं नही जाउँगा।
(ङ) यदि सुमन आती तो रेनू जाती । (च) परिश्रम करो अन्यथा फेल हो जाओगे।

(3) (क) तो (ख) अपितु (ग) क्योकि (घ) और (ड़) अन्यथा (च) तो (छ) अन्यथा (ज) या

(4) (क) दो शब्दों, दो वाक्यांशों या दो वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं। जैसे- खेत सूख गए <u>क्योंकि</u> वर्षा नहीं हुई।, नीता <u>आई</u> और सो गई।

(ख) समुच्चयबोधक के दो भेद हैं- (क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक (ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक
समानाधिकरण समुच्चयबोधक – जिन समुच्चयबोधक शब्दो द्वारा दो समान शब्दों, दो वाक्य के अंशो और दो वाक्यों को जोड़ा जाता है, उन्हे समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते है।
जैसे – रावण और विभीषण सगे भाई है।
व्यधिकरण समुच्चयबोधक – किसी प्रधान या अश्रित उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहते है। जैसे – वह गिर पड़ा क्योकि रास्ते में गड्ठा था।

विस्मयादिबोधक शब्द

(1) (क) वाह! (ख) शाबाश! (ग) छि: छि:! (घ) सावधान! (ङ) जीते रहो! (च) जी हाँ! (छ) नहीं!
(ज) वाह! (झ) अरे!

(2) (क) हर्ष बोधक (ख) चेतावनी बोधक (ग) विस्मय बोधक (घ) पीड़ा बोधक (ङ) हर्ष बोधक
(च) संबोधन बोधक (छ) अनुमोदन बोधक (ज) संबोधान बोधक (झ) शोक बोधक

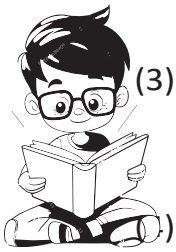

(3) (क) सावधान! सामने से गाड़ी आ रही है। (ख) बहुत अच्छा! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।
(ग) वाह! तुमने तो कमाल कर दिया। (घ) शाबाश ! तुम बहुत अच्छे अंक लाए हो।
(ङ) हाय! यह क्या हो गया?

(4) (क) छि: छि: ! ये चारों ओर गंदगी किसने फैलाई हैं।
(ख) ओह! इस आम में तो कीड़ा लगा हुआ है।
(ग) वाह! आइए आपका स्वागत है।
(घ) क्या! मैं भी विदेश की यात्रा पर जा सकता हूँ।

(5) (क)हाँ! मैं तैयार हूँ। (ख) अरे! आप आ गए। (ग) धन्यवाद! मैं आपका कृतज्ञ हूँ।
(घ) हाय! मेरा तो सब कुछ लुट गया।

(6) (क) जो शब्द विस्मय, घृणा, हर्ष, शोक, भय, क्रोध तथा दुख आदि तीव्र मन के भावों को प्रकट करते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं जैसे- हाय! ये क्या हो गया।, वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।
(ख) i. विस्मयादिबोधक शब्द सदा वाक्य के प्रारंभ में किया जाता हैं।
ii. ये अविकारी होते हैं अर्थात् लिंग, वचन आदि के कारण इनका रूप नहीं बदलता।
iii.ये शब्द अनायास मुख से निकल जाते हैं।
iv. इनका मुख्य कार्य केवल मन के भावो कों व्यक्त करना होता है।
v. इनके साथ (!) चिह्न लगाया जाता हैं। कभी-कभी अर्धाविराम का भी प्रयोग किया जाता है।

निपात

(1) (क) आप भी हमारे घर आइये। (ख) मैं देर तक पढ़ता रहा। (ग) मैं रात भर सो न सका ।
(घ) हमें आज ही मुबंई जाना है। (ङ) मुझे मात्र सौ रुपये चाहिए।

(2) (क) भी (ख) भर (ग) मात्र (घ) ही

पाठ 16 पद परिचय

(1) (क) खा-सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, वर्तमान काल, कर्ता-आयुष
(ख) वह - पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, जाएगा क्रिया का-कर्ता
बाजार - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक जाएगा क्रिया का अधिकरण
जाएगा - अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, सामान्य भविष्यत् काल, अन्य पुरुष कर्ता-वह
(ग) अरे, विस्मयादिबोधक - आश्चर्य का भाव
तुम - पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक आए क्रिया का कर्ता
कब - कालवाचक क्रियाविशेषण, आए-क्रिया की विशेषता बताती है।
(घ) परीक्षा - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन,
(ङ) सवेरे - कालवाचक क्रियाविशेषण, उठा क्रिया से संबंध
बाजार-जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन
(च) और - समानाधिकरण समुच्चयबोधक, राजेश रोहन को मिलाता है।
(छ) काला - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, विशेषण-घोड़ा
घोड़ा-जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग
तेज - रीतिवाचक क्रियाविशेषण

पाठ 17 वाक्य विचार

(1) (क) संयुक्त (ख) सरल (ग) मिश्र (घ) संयुक्त (ङ) सरल (च) मिश्र

(2) (क) प्रश्नवाचक (ख) इच्छावाचक (ग) निषेधवाचक (घ) संदेहवाचक (ङ)संकेतवाचक ।

(3) (क) क्रियाविशेषण उपवाक्य (ख) संज्ञा उपवाक्य (ग) प्रधान उपवाक्य
(घ) संज्ञा उपवाक्य (ङ) विशेषण उपवाक्य

(4)

उद्देश्य	विधेय
(क) आयुष	किताब पढ़ रहा है।
(ख) मोर	जंगल में नाच रहा है।
(ग) मेरे भाई ने	एक सेब खाया।
(घ) वे	उधर कहाँ जा रहे है ?
(ङ) पृथ्वी	सूर्य के चारों ओर घूमती है।

(5) (क) संदेहार्थक वाक्य (ख) विस्मयादिबोधक (ग) प्रश्नार्थक (घ) संकेतार्थक (ङ) निषेधार्थक

(6) (क) इच्छावाचक (ख) इच्छावाचक (ग) इच्छावाचक (घ) आज्ञावाचक (ङ) आज्ञावाचक

(7) (क) अर्थ प्रकट करने वाले सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह को वाक्य कहते हैं। जैसे- रजत खाना खा रहा है।, घोड़ा तेज दौड़ता है।

(ख) वाक्य के अंग -

वाक्य के दो प्रमुख अंग है- (i) उद्देश्य (ii) विधेय

रजत खाना खा रहा है नेहा गाना गा रही है।

खंड 'क' (उद्देश्य)	खंड 'ख' (विधेय)
रजत	खाना खा रहा है।
नेहा	गाना गा रही है।

खंड 'क' आए 'रजत' और 'नेहा' उद्देश्य है, क्योंकि वाक्यों में इन्हीं के विषय में कुछ कहा गया है तथा खंड 'ख' के अंतर्गत आए 'खाना खा समूह विधेय हैं, क्योंकि ये सभी उद्देश्य के विषय में कुछ बता रहे हैं। कुल मिलाकर यह स्पष्ट होता है कि वाक्य में प्रयुक्त 'कर्ता' उद्देश्य होता है तथा शेष 'कर्म और 'क्रिया' आदि विधेय।

(ग) वाक्य के भेद:-

1. **अर्थ के आधार पर-**

i. विधानार्थक वाक्य- घोड़ा दौड़ता है।, किसान हल चालाता है।

ii. निषेधार्थक वाक्य- मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।, राधा मीरा को नहीं जानती है।

iii. इच्छार्थक वाक्य- मेरी इच्छा है, रमेश पढ़े। भागवान तुम्हारी मनोकामना पूरी करे।

iv. प्रश्नार्थक वाक्य- क्या रमेश पढ़ रहा है? दरवाजे पर कौन खड़ा हैं?

v. आज्ञार्थक वाक्य- जाओ, जाकर सो जाओ।, आकाश पढ़ाई करो।

vi. संदेहार्थक वाक्य-शायद अमन पढ़ रहा है।, वह खाना खा चुका होगा।

vii. संकततार्थक- यदि दवा लोगे तो जल्दी अच्छे हो जाओंगे। यदि ध्यान से पढ़ोंगे, तो पास हो जाओंगे।

viii. विस्मयादि बोधाक वाक्य- वाह! कितना सुदंर दृज़्य है।„ाबाज़ ! तुमने परिवार का नाम रोज़न कर दिया।

2. **रचना के आधाार पर-**

i. सरल वाक्य - आयुष पढ़ रहा है।, नेहा चित्र बनाएगी।

ii. संयुक्त वाक्य - नेहा आई और सुनीता चली गई।, अंशु अमेरिका गई हैं परंतु जल्द ही लौट आएगी।

iii. मिश्र वाक्य - नेहा आई तो सुनीता चली गई, मदन ने कहा कि वह कल नही आएगा।

पाठ 18 विराम चिह्न

(1) पूर्णविराम (।) अल्पविराम चिह्न (,) लाघव चिह्न(०)
अर्धविराम चिह्न (;) प्रश्नवाचक (?) विस्मयादिबोधक (!)
योजक चिह्न (-) कोष्ठक [( )]

(2) (क) वाक्य बोलते या लिखते समय विराम प्रकट करने वाले चिह्न को 'विराम चिह्न' कहते हैं। जैसे- राकेश खाना खा रहा है। (। पूर्ण विराम), सज्जनों, मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो (, अल्प विराम)
(ख) विराम-चिह्नों का प्रयोग इसलिए किया जाता हैं क्योंकि ये किसी वाक्य को बोलते समय हमें संकेत देते हैं कि कब थोड़ा रूकना है और कब पूर्ण रूप से विराम करना है।

(3) (क) समय आता जाता रहता है। (ख) "क्या आप चलते चलते थक गए हैं?"
(ग) वाह! तुमने तो कमाल कर दिया। (घ) माँ ने बाजार से फल, सब्जियाँ, दालें व मसाले खरीदें।
(ङ) आयुष खाना खाकर खेलने चला गया।

(4) (क) अल्पविराम- वाक्य बोलते समय जब हम थोड़ा रूकते हैं, तब अल्पविराम का प्रयोग किया जाता हैं। अल्पविराम का प्रयोग निम्न स्थितियों में किया जाता है जैसे-

i. एक जैसे शब्दों को अलग-अलग करने के लिए- जैसे- फल वाला, केले, संतरे आदि बेच रहा है।
ii. वाक्यांश को जोड़ने के लिए:- नेहा ने विद्यालय से आकर वस्त्र बदले, खाना खाया और थोड़ा आराम किया।
iii. समुच्चयबोधक से पहले:- जैसे-रमेश बहुत समझदार है, परंतु उसका भाई मूर्ख हैं।
iv. कथन को स्पष्ट करने के लिए:- जैसे अध्यापक ने बताया, हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है।
v. संबोधन तथा हाँ या नही के बाद- जैसे-सज्जनो, मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो।

(ख) अर्धविराम:- (,) पूर्णविराम की तुलना में जन कुछ कम अवधि के लिए रूकना हो, तो उसमें अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे- वह विद्यालय नही आया, क्योंकि वह बीमार था।
(ग) योजक चिह्न:- दो या अधिक शब्दों को जोड़ने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे- माता-पिता, लड़का-लड़की

पाठ 19 शब्द भंडार

(1) (क) दुर्गंध, (ख) निरादर, (ग) अवगुण, (घ) शत्रु

(2)

चढ़ाव	सौभाग्य	समाप्त
आय	श्याम	अपकार
आदर	अग्रज	दुर्गुण
सुबह	सधवा	मदं
दयालु	उच्च	गरम
असफल	अनिच्छा	सुगम

(3) (क) स्वर्ग (ख) अपमान (ग) क्रेता (घ) उदार (ङ) अभिशाप (च) आदान (छ) संक्षेप

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(1) (क) आस्तिक (ख) ज्वालामुखी (ग) जलचर (घ) अनभिज्ञ (ङ) शैव(च) सुलभ (छ) अभागा (ज) अप्रत्याशित

(2) (क) जो कहानी लिखता हो - कहानी कार, (ख) जो मिट्टी के बर्तन बनाता हो - कुम्हार

(ग) जो सदा सत्य बोलता हो – सत्यवादी
(ङ) जो आँखो के सामने हो – प्रत्यक्ष
(छ) जो ईश्वर में विश्वास न करें– नास्तिक
(झ) कम खर्च करने वाला – मितव्ययी
(घ) जो थल पर विचरण करे – थलचर
(च) जो तीन महीने में एक बार हो – त्रैमासिक
(ज) बोलने वाला – वक्ता

पर्यायवाची शब्द

(1) (क) धूल (ख) धनुष (ग) फल (घ) शरबत (ङ) कार्य (च) तात्पर्य (छ) आकार (ज) लाभ
(झ) रमा (ञ) नग (ट) शर (ठ) बंश (ड) मधुप (ढ) भातंग (ण) हरी
(2) (क) मरीचि (ख) पतंग (ग) चालाक (घ) सेनापति (ङ) क्षीर (च) अली (छ) बार (ज.) वीर
(3) (क) किसान (ख) आँखों (ग) सूर्य (घ) शरीर (ङ) पुत्र

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

(1) (क) अनल (ख) हंस (ग) अन्य (घ) अंदर (ङ) फन (च) तरणि (छ) ग्रंथि (ज) बात (झ) अनु
(ञ) अवधि (ट) अलि (ठ) उद्धूत (ड) प्रणम (ढ़) निर्झर (ण) मूल (त) सूत

(2) (क) शाम को सूर्य अस्त हो जाता हैं। श्री कृष्ण श्याम वर्ण के थे।
(ख) अन्न जीवन के लिए आवश्यक है। वन में जोर के अतिरिक्त अन्य पशु भी रहते हैं।
(ग) मेरे योग्य कार्य हो तो बताना । दो और दो का योग चार होता है।
(घ) फुलों पर अलि मंडरा रहा हैं। मैं और मेरी अली घूमने गये ।
(ड़) मेंरे पिता को वात रोग हैं। मैं और मेरा भाई बात कर रहे हैं।
(च) तरणि पूर्व दिशा में उदय होता हैं। नदी में तरणी चल रही हैं।
(छ) मेरा मित्र मेरा अनुचर है। अणुशक्ति का सदुपयोग करना चाहिए।
(ज) दिन के समय तेज धूप होती हैं। भिखारी दीन दशा में था।
(झ) हमें अतिथि को देव मानना चाहिए हमें अपने अन्दर दैवी गुणो का संचार करना चाहिए।
(ञ) राम राजा दशरथ के सुत थे। सूत से कपड़ा बनता है।

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

(1) (क) गर्व (ख) पुत्र (ग) कृपा (घ) भिन्न (ङ) सामान्य (च) संदेह (छ) आनंद (ज) आशंका
(2) (क) प्राचीन काल में युद्ध में अस्त्र और शास्त्र दोनों का प्रयोग होता था।
तलवार एक शास्त्र है।
(ख) गलत कामों के कारण नेता का अपय फैलने लगा। दहेज प्रथा हमारे समाज पर कलंक हैं।
(ग) मुझे खेद है कि मैं समय पर न पहुँच सका। महात्मा गाँधी की मृत्यु पर पूरे देश को शोक हुआ।
(घ) हमें अपने गुणों पर अभिमान नहीं करना चाहिए। अहंकार मनुष्य का शत्रु है।
(ङ) शास्त्री जी का निधन रूस में हुआ था। मनुष्य को मृत्यु से डरना नहीं चाहिए।

अनेकार्थक शब्द

(1) (क) शिव (ख) तात्पर्य (ग) कार्य (घ) वसंत (ङ) कपड़ा (च) कारण (छ) स्फटिक, फसल
(2) (क) रहस्य, अतर (ख) मंदिरा, शहद (ग) कपड़ा, आकाश
(घ) फल का रस, आनंद (ङ) प्रेम, संगीत का राग (च) फड़ा, शरीर
(छ) परिणाम, पेड़ का फल (ज) सूर्य, लाल (झ) वर्षा, आनंद
(ञ) जड़, सारांश

भाषा-खेल

1. सुंदर-कुरूप	दिन-रात	2. भानु, सूर्य, दिनकर
3. सोना, धतूरा, गेहूँ	4. मकान, कमरा, कुल	5. पृथ्वी, स्थिर

पाठ 20 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(1) (क) मुहावरें ऐसे शब्दों का समूह होता है, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है। जैसे आँखों में धूल झोंकना का अर्थ है धोखा देना।

(ख) 1. मुहावरे पूर्ण वाक्य नहीं होते, वाक्यांश होते हैं।

2. मुहावरे अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं।

(2) (क) जी खट्टा होना – मन खराब होना

(ख) आँख में काँटे की तरह चुभना – बहुत तकलीफ सहना

(ग) दिल टूटना – किसी बात पर निराश होना

(घ) खून पसीना एक करना – बहुत मेहनत करना

(ङ) कमर कसना – काम के लिए तैयार होना

(च) आँख दिखाना – गुस्सा करना

(3)

मुहावरे		**अर्थ**	**वाक्य प्रयोग**
अक्ल का दुश्मन	–	मूर्ख,	मुरली अक्ल का दुश्मन है।
बाएँ हाथ का खेल	–	बहुत आसान,	गणित के कठिन प्रश्न करना पिता जी के बाएँ हाथ का खेल है।
हवा से बातें करना	–	बहुत तेज दौड़ना,	महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक हवा से बातें करता था।
ईद का चाँद होना	–	बहुत दिनों बाद मिलना,	आजकल राधा दिखाई नहीं देती वह तो ईद का चाँद हो गई है।
दाँत पीसना	–	बहुत गुस्सा करना,	अपने बच्चे के फेल होने पर पिता दाँत पीसता रह गया।
घी के दीए जलाना	–	खुशियाँ मनाना,	मोहन लाल चुनाव जीत गए हैं। इसलिए घर के लोग घी के दीए जला रहे है।
आग बबूला होना	–	बहुत गुस्सा होना,	अंगद की बातें सुनकर रावण आग बबुला हो गया।
कमर कसना	–	तैयार होना,	मैने बोर्ड की परीक्षा के लिए कमर कस ली है।
डंका बजाना	–	प्रभाव दिखाना,	रानी लक्ष्मीबाई ने सारे भारत में अपनी वीरता का डंका बजा दिया।

लोकोक्तियाँ

(1) (क) सभी लोग एक समान नहीं होते। (ख) दिखाना अधिक काम कम।

(ग) बिल्कुल अनपढ़ होना। (घ) जबरदस्ती गले पड़ना।

(ङ) उचित न्याय करना।

(2) (क) लोक अनुभव से प्राप्त सीख को एक वाक्य में कह देना लोकोक्ति कहलाता है। जैसे-मान न मान मैं तेरा मेहमान का अर्थ है जबरदस्ती गले पड़ना ।

(ख) 1. मुहावरा पूर्ण कथन नहीं होता है, लोकोक्ति पूर्ण कथन है।

2. मुहावरे का प्रयोग वाक्य के बीच में किया जाता हैं, लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र रूप में किया जा सकता है।

(3) (क) दीपक तले अँधेरा अर्थ – अपना दोष न दिखना

वाक्य – आयुष के पिता गणित में बहुत होशियार हैं, परतुं आयुष को गणित समझ में नही आता। यह तो वही बात हुई, दीपक तले अँधेरा।

(ख) एक अनार सौ बीमार अर्थ – एक वस्तु, अनेक इच्छुक

वाक्य प्रयोग – फ्रिज में केवल एक पेस्ट्री रखी है, सभी लोग खाना चाहते हैं। यह तो वही बात हो गई, एक अनार सौ बीमार।

(ग) जैसी करनी, वैसी भरनी अर्थ – कार्य के हिसाब से फल

वाक्य प्रयोग – राम ने पूरा साल खेल कूद में बीता दिया, इसलिए परीक्षा में उसके अच्छे अंक नही आए। इसे कहते जैसी करनी , वैसी भरनी।

(घ) मान न मान, मैं तेरा मेहमान अर्थ – जबरदस्ती गले पड़ना

वाक्य प्रयोग – रूपा दीपा से दूर भागती है फिर भी दीपा उसका पीछा नहीं छोडती। इसे कहते मान न मान मैं तेरा मेहमान।

(ड) अंधा चाहें दो आँखे अर्थ – जिसके पास जो चीज नही, वह उसे मिल जाए।

वाक्य प्रयोग – अमन को जो नौकरी चाहिए थी सो मिल गई। अंधे को क्या चाहिए? दो आँखे।

(च) दूध का दूध पानी का पानी अर्थ सच्चा न्याय

वाक्य प्रयोग –आज न्यायधीश ने अपराधियों को सजा सुनाई और निरपक्ष व्यक्तियों की रिहाई का आदेश दिया। इसे कहते है, दूध का दूध पानी का पानी।

भाषा-खेल

उँगली उठाना	चिकना घड़ा
दोष लगाना	जिस पर किसी बात का असर न हो
कान भरना	उल्लू बनाना
चुगली करना	मूर्ख बनाना
आँखों का तारा	मक्खियाँ मारना
बहुत प्यारा	निठल्ला

पाठ 21 अंलकार

(1) (क) उपमा (ख) उपमा (ग) अनुप्रास (घ) रूपक (ङ) उपमा (च) अनुप्रास (छ) अतिशयोक्ति (ज) अनुप्रास (झ) उपमा

(2) (क) शब्दों एवं अर्थों के चमत्कार पूर्ण प्रयोग को अलंकार कहते हैं।

(ख) जहाँ कुछ विशेष शब्दों के कारण अभिव्यक्ति में सुंदरता आती है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जहाँ कथन विशेष में सौंदर्य अर्थ की विशिष्टता के कारण आया हो, वहाँ अर्थलंकार होता है।

पाठ 22 अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

(1) (क) भारत आज सांप्रदायिकता के रंग में रंगा हुआ है।
भारतीयता की पहचान लुप्त होती जा रही है।
संप्रदायवाद धमांध होने की अनुमति नहीं देता है
देश सांप्रदायिकता की अग्नि में जल रहा हैं।

युवा पीढ़ी यदि सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर भारतीयता के रंग में रंग जाए तो राष्ट्र निर्माण में उसका योगदान प्रशंसनीय होगा।

(2) (क) पुष्प सुरबाला के गहनों में गूंथा जाने प्रेमी की माला में बिंधन की सम्राटों के शव पर डाले जाने की, देवों के सिर चढ़ कर भाग्य पर इतराने की चाह नहीं रखता है।

(ख) देवों के सिर चढ़ने से उसे मातृभूमि पर न्यौछावर होने वाले वीरों के पथ में बिछा सौभाग्य लगता है।

(ग) मातृभूमि पर न्यौछावर होने वाले वीरों के पथ में बिछना।

(घ) चीटी, मूर्धा (ङ) शीर्ष- शिखर

पाठ 23 पत्र लेखन

(1) 20, छात्रवास
देशबंधु कॉलेज, दिल्ली
10 जून, 20.....
पूज्य पिता जी
सादर चरण-स्पर्श
आप सपरिवार कुशल होंगे। कल ही मेरा वार्षिक परीक्षा फल आया है। मैं उत्तीर्ण तो हो गया हूँ परंतु मेरे अंक गणित और विज्ञान विषयों में कम आए हैं मैंने अपनी ओर से तो पूरा प्रयत्न किया था लेकिन ये विषय कुछ कठिन हैं। दूसरा परीक्षा से कुछ दिन पहले मुझे ज्वर हो गया था। इस कारण भी परीक्षा फल पर बुरा प्रभाव पड़ा। पिता जी, मैं इसके लिए आप से क्षमा याचना करता हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अगला परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा होगा। मैं आरंभ से ही ध्यान से पढ़ूँगा मैं निरंतर अभ्यास भी करूँगा। आशा है इस बार आप मुझे क्षमा कर देंगे। घर में सबको मेरा प्रणाम और अंकित को प्यार।
आपका पुत्र
राजीव

(ख) देवेंद्र कुमार,
संत नगर, करोल बाग
नई दिल्ली
दिनांक- 10-03-20....
महाप्रबंधक महोदय,
दिल्ली विद्युत बोर्ड
दिल्ली।
विषय:- बार-बार बिजली के चले जाने का संकट।
महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान दिल्ली के संतनगर, करोल बाग में बिजली के बार-बार चले जाने और इससे इस क्षेत्र के निवासियों को होने वाली असुविधाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। महोदय, संतनगर क्षेत्र में पिछले लगातार दो-तीन महीनों से बिजली की आँख-मिचौली का खेल चल रहा है। बिजली आती है और चली जाती है। जब आती भी है तो उसकी वोल्टेज इतनी कम होती है कि उससे ट्यूबलाइट तक नहीं जल पाती। बार-बार बिजली आने जाने से विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते हैं और न ही व्यापारी अपना व्यापार ढंग से कर पाते हैं। बिजली के अभाव में पानी की मोटरो से पानी उपर की मंजिलों तक नहीं पहुँच पाता/बिजली के आने जाने का कोई समय निश्चित नही।
अत: आपसे अनुरोध है कि इस क्षेत्र की समस्या पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे और इसके निराकरण के लिए आवश्यक कदम शीघ्र उठाएँ।
धन्यवाद।
भवदीय, देवेंद्र कुमार
निवासी संतनगर, करोल बाग। नई दिल्ली।

(ग) सेवा में,

वार्डन महोदय,

छात्रवास,

आर्य समाज कॉलेज, कराले बाग

विषय- छात्र वास की समस्याओं के निराकरण के लिए वार्डन को पत्र।

मान्यवर,

मैं और छात्रवास के मेरे अन्य सहपाठी मिलकर आपसे निवेदन करते हैं कि हमें यहा कुछ समस्याएँ हैं। आप कृपया उनका उचित हल शीघ्र करने का प्रयास करें। सबसे बड़ी समस्या पेयजल की है। गरमी अधिक होने के कारण पानी की खपत अधिक है। जो पानी पीने को मिलता है वह भी पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं होता। इससे कोई छात्र बीमार पड़ सकता है। दूसरी समस्या कमरों की सफाई की है। सफाई कर्मचारी नियमित रूप से नहीं आते। यदि आते है तो भी ढंग से सफाई नहीं करता। तीसरी और सबसे मुख्य समस्या भोजन की है। खाने में सब्जी में अधिक मिर्च मसाला का प्रयोग होता है। रोटी आधी कच्ची पक्की होती है। छात्रों को कुछ मिनट देरी से पहुँचने पर खाना नहीं दिया जाता। आशा है आप हमारी समस्याओं पर सोच विचार कर उन्हें दूर करने का शीघ्र प्रयत्न करेगें।

भवदीय,

संदीप और छात्रवास के अन्य छात्र

(घ) 22 बी0 गुलाबी बाग,

नई दिल्ली।

दिनांक- 11.03.20.....

प्रिय रोहित

चिरायु भव

आज मुझे तुम्हारे मित्र मोहित का पत्र मिला। उसने मुझे बताया है कि तुम अपना समय व्यर्थ गँवाते हो। तुम बुरे लड़कों की संगति में दिन भर इधर-उधर भटकते हो और अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते। भाई, समय बहुत मूल्यवान है। इसका प्रत्येक क्षण बहुमूल्य है। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग कर लेता है, वह जीवन में सफलता प्राप्त करता है। समय व्यर्थ गँवाने वाला बाद में पछताता है। तुम्हें यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि बीता समय कभी वापस नहीं आता। इसलिए आज का काम कल पर मत छोड़ो। समय के हर क्षण का सदुपयोग कर तुम जीवन में उन्नति करोगे।

मेरे पत्र का उत्तर शीघ्र देना। माँ व पिता जी की ओर से तुम्हें ढेर सारा प्यार और आर्शीवाद।

तुम्हारा बड़ा भाई

राहुल

(ङ) बी0-40, रानी बाग,

नई दिल्ली।

प्रिय मित्र

नमस्कार,

तुम्हारा प्रेम भरा पत्र मिला। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम सकुशल हो। आज मैं तुम्हें अपने अध्यापक श्री हरि मोहन के विषय में बताता हूँ। हरि मोहन जी गणित विषय के अध्यापक हैं। उनका पढ़ाने के कारण मेरा गणित विषय में मन लग गया है। इसके अतिरिक्त वह बहुत अच्छे स्वभाव के हैं। इसलिए वह छात्रों में लोकप्रिय हैं। वह गणित विषय में कमजोर छात्रों को अलग समय देते हैं। वह हर सप्ताह हमारा टेस्ट लेते हैं। वह हमारी कमियों को प्रेमपूर्वक समझा देते हैं। उनके पीरियड में प्रत्येक छात्र पूरा ध्यान पढ़ाई।

पर देता है। ईश्वर से मेरी प्रार्थना हैं कि वह उन्हें चिरायु करे ताकि वह छात्रों को उचित मार्गदर्शन करते रहें।

मेरे पत्र का उत्तर शीघ्र देना। तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम और बहन अंशु को प्यार।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

धीरज

(1) (क) **आप भले तो जग भला**– किसी भी व्यक्ति का व्यवहार और स्वभाव सबसे महत्वपूर्ण है। वह जैसा व्यवहार दूसरों के साथ करता हैं वे लोग भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं। बुरा व्यक्ति अन्य लोगों से बुरा व्यवहार करता है। इसलिए दूसरे लोग भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं। यदि हम किसी को सुख पहुँचाते हैं तो दूसरा हमारे साथ अच्छा व्यवहार करता है। किसी को कष्ट या पीड़ा देंगे तो वह भी हमसे बदला लेगा। इसलिए सच ही कहा हैं– आप भले तो जग भला। व्यक्ति को सदा प्रयास करना चाहिए–कर भला तो हो भला।

(ख) दिल्ली भारत की राजधानी है। यहाँ की सैर का अपना ही महत्व है इसलिए प्रतिदिन सैकंडों लोग देश विदेश से यहाँ आते रहते हैं। दिल्ली में अनेक दर्शनिक स्थल हैं जैसे–लाल किला, जामा मस्जिद, पुराना किला, जंतर–मंतर, राजघाट आदि। दिल्ली के बाज़ारों में चाँदनी चौक, कनॉट प्लेस, करोल बाग आदि प्रमुख हैं। यहाँ पर्यटक अपनी मनपसंद वस्तुएँ खरीद सकते हैं। दिल्ली का चिड़ियाघर अपने आप में अनूठा है। दिल्ली की सैर में मैट्रो रेल का अपना महत्व है। इससे आवागमन सरल हो गया है। व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र पहुँच जाता है। दिल्ली का राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, मुगल गार्डन, चिल्ड्रेन पार्क, लोदी गार्डन, बुद्धा जयंती पार्क आदि भी बहुत खूबसूरत हैं। कनाट प्लेस का पालिका बाजार भी देखने योग्य हैं। यहाँ आप खरीदारी भी कर सकते हैं। दिल्ली में अब तो शॉपिंग कॉम्पलेक्स और मॉल भी बन गए। यहाँ आप खरीदारी व खाने पीने का आनंद उठा सकते हैं। इसलिए जब भी दिल्ली आए, दिल्ली के दर्शनीय स्थल देखें व दिल्ली की सैर अवश्य करें।

(ग) **बिना बुलाया मेहमान**– मेहमान को अतिथि कहा जाता है अर्थात् उसके आने की तिथि निश्चित नहीं हैं। अंग्रेजी में एक कहावत है कि बिना बुलाये मेहमान का कभी स्वागत नहीं होता। उससे हर कोई पिंड छुड़ाना चाहता है। यदि मेहमान लंबे समय तक रह जाए तो मेंजबान उससे छूटकारा पाना चाहता है। थोड़े समय के लिए तो उसकी आवभगत की जाती है परंतु कुछ दिन बाद वह अपना सम्मान खो देता है। इसलिए मेहमान का कर्तव्य है कि वह मेंजबान पर बोझ न डाले। इससे मेहमान का सम्मान बना रहेगा और कोई पीठ पीछे उसकी निंदा नहीं करेगा मेहमान को यथासंभव प्रयास करना चाहिए कि उसके कारण मेजबान को कोई कष्ट न हो। इससे उनके आपसी रिश्तों में दरार नहीं आएगी और परस्पर सद्भाव बना रहेगा।

(घ) एकता से हम जीवन में उन्नति करते हैं और अलग होने या बिखरने से अवनति। हम देखते हैं कि संयुक्त परिवार में रहने से हमारा जीवन सरल और सुचारू रूप से चलता है। इसके विपरीत एकल परिवार में कई समस्याएँ आती हैं। पूरा देश में एकता से देश फलता फूलता हैं। भारत एक विशाल देश हैं। यहाँ अनेक भाषाओं, खान–पान, रहन–सहन तथा रीतिरिवाज अलग हैं। इतनी विविधताएँ होने के बावजूद भारत में एकता विद्यमान है। विभिन्नताओं में एकता भारतीय संस्कृति की अनुठी विशेषता है। गंगा जैसी पवित्र नदी ने भारत को एकता के सूत्र में बाँध रखा हैं। शरीर की पाँच उँगलियाँ मिल जाएँ तो मुट्ठी बन जाती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य हैं कि पारिवारिक, समाजिक और राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करे।

(ङ) गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। यह प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। यह पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन 1950 को स्वतंत्र भारत का नया संविधान लागू हुआ था। गणतंत्र दिवस का जुलूस सुबह 8 बजे इंडिया गेट से शुरू होकर लाल किले तक जाता है। इस दिन भारत के हर प्रांत से लोग इस जलूस को देखने आते हैं, इस जलूस में थल सेना, जल सेना और वायु सेना के जवान हिस्सा लेते हैं, स्कूल के लड़के–लड़कियाँ और एन. सी. सी. के छात्र भी अपना प्रदर्शन करते हैं। भारत के हर प्रांत की खूबसूरत झाँकियाँ जुलूस में चार चाँद लगा देती हैं। कुछ हवाई जहाज तिरंगे झंडे के तीन रंग छोड़ते हैं। शाम के समय सरकारी भवनों, संसद भवन, राष्ट्रपति भवन आदि पर रोशनी की जाती हैं। गणतंत्र दिवस के दिन प्रत्येक कार्यालय, स्कूल और कॉलेज में अवकाश रहता है। भारत में इस दिन का विशेष महत्व है।

(च) **व्यायाम से लाभ**– एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है– पहला सुख निरोगी काया। स्वस्थ शरीर मनुष्य–जीवन के लिए वरदान है। इसके लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है। व्यायाम करने से शरीर मजबूत होता है। इससे मन स्वस्थ और प्रसन्न रहता है। व्यायाम से शरीर मजबूत होता है व्यायाम से शरीर में चुस्ती स्फूर्ती आती है। शरीर में रक्त का संचालन उचित रूप से होता है। शरीर का हर अंग स्वस्थ और पुष्ट हो जाता है। खेल व्यायाम का एक मनोरंजक रूप हैं। जो आलस्य के कारण व्यायाम से कतराते हैं, वे भी खेलों में पूरी दिलचस्पी दिखाते हैं। हमें सुबह जल्दी उठकर प्रातः भ्रमण के लिए जाना चाहिए। किसी पार्क या खुले स्थान पर व्यायाम करना चाहिए। इससे बीमारियाँ और व्याधियाँ दूर होंगी और शरीर और मन स्वस्थ होंगे।

(छ) **मेरा जीवन लक्ष्य**– एक नाव को यदि यूँ ही सागर में छोड दिया जाए तो वह दिशाहीन हो भटकती रहती है। उसी प्रकार मनुष्य जीवन भी यदि दिशाहीन हो तो वह कहीं भी नहीं पहुँच पाता। अतः हम सबको जीवन में आगे बढ़ने के लिए लक्ष्य होना चाहिए मेरा एक लक्ष्य हैं डॉक्टर बनना। डॉक्टर बनकर मैं धन कमाने के साथ–साथ मानवता के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्ति भी कर पाउँगा। डॉक्टर बनने के लिए मुझे बहुत पढ़ना होगा और बहुत पैसे भी खर्च करने होगे। डॉक्टर जब प्रेमपूर्वक और नम्रता से रोगी से बात करता है तो आधी बीमारी तो खुद दूर हो जाती है। मैं चाहता हूँ कि डॉक्टर बनकर कुछ समय उन असहाय, और निर्धन लोगो को अर्पित करूँ जो जीवन में कभी अच्छी चिकित्सा नहीं करा पाते।

(ज) सिनेमा मनोरंजन का साधन है। यह लोगों में बहुत लोकप्रिय है। सिनेमा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का सबसे अच्छा माध्यम है। यह समाज का पूरा ढाँचा बदलने में समर्थ है। सिनेमा से हमें शिक्षा और जानकारी मिलती है। यह समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर कर सकता है। सिनेमा दहेज प्रथा, बाल विवाह, छुआ छूत, जैसी बुराइयों को दूर करके समाज में हिंदू–मुस्लिम एकता ला सकता हैं जैसे– पुरानी फिल्म 'दोस्ती' में दिखाया गया। लेकिन आजकल का सिनेमा जहर फैला रहा हैं। अधिक धन कमाने के छुड़ाना चाहता है। यदि मेहमान लंबे समय तक रह जाए तो मेंजबान उससे छूटकारा पाना चाहता है। थोड़े समय के लिए तो उसकी आवभगत की जाती है परंतु कुछ दिन बाद वह अपना सम्मान खो देता है। इसलिए मेहमान का कर्तव्य है कि वह मेंजबान पर बोझ न डाले। इससे मेहमान का सम्मान बना रहेगा और कोई पीठ पीछे उसकी निंदा नहीं करेगा मेहमान को यथासंभव प्रयास करना चाहिए कि उसके कारण मेजबान को कोई कष्ट न हो। इससे उनके आपसी रिश्तों में दरार नहीं आएगी और परस्पर सद्भाव बना रहेगा।

(घ) एकता से हम जीवन में उन्नति करते हैं और अलग होने या बिखरने से अवनति। हम देखते हैं कि संयुक्त परिवार में रहने से हमारा जीवन सरल और सुचारू रूप से चलता है। इसके विपरीत एकल परिवार में कई समस्याएँ आती हैं। पूरा देश में एकता से देश फलता फूलता हैं। भारत एक विशाल देश हैं। यहाँ अनेक भाषाओं, खान–पान, रहन–सहन तथा रीतिरिवाज अलग हैं। इतनी विविधताएँ होने के बावजूद भारत में एकता विद्यमान है। विभिन्नताओं में एकता भारतीय संस्कृति की अनुठी विशेषता है। गंगा जैसी पवित्र नदी ने भारत को एकता के सूत्र में बाँध रखा हैं। शरीर की पाँच उँगलियाँ मिल जाएँ तो मुट्ठी बन जाती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य हैं कि पारिवारिक, समाजिक और राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करे।

(ङ) गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। यह प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। यह पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन 1950 को स्वतंत्र भारत का नया संविधान लागू हुआ था। गणतंत्र दिवस का जुलूस सुबह 8 बजे इंडिया गेट से शुरू होकर लाल किले तक जाता है। इस दिन भारत के हर प्रांत से लोग इस जलूस को देखने आते हैं, इस जलूस में थल सेना, जल सेना और वायु सेना के जवान हिस्सा लेते हैं, स्कूल के लड़के–लड़कियाँ और एन. सी. सी. के छात्र भी अपना प्रदर्शन करते हैं। भारत के हर प्रांत की खूबसूरत झाँकियाँ जुलूस में चार चाँद लगा देती हैं। कुछ हवाई जहाज तिरंगे झंडे के तीन रंग छोड़ते हैं। शाम के समय सरकारी भवनों, संसद भवन, राष्ट्रपति भवन आदि पर रोशनी की जाती हैं। गणतंत्र दिवस के दिन प्रत्येक कार्यालय, स्कूल और कॉलेज में अवकाश रहता है। भारत में इस दिन का विशेष महत्व है।

(च) **व्यायाम से लाभ**– एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है– पहला सुख निरोगी काया। स्वस्थ शरीर मनुष्य–जीवन के लिए वरदान है। इसके लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है। व्यायाम करने से शरीर मजबूत होता है।

इससे मन स्वस्थ और प्रसन्न रहता है। व्यायाम से शरीर मजबूत होता है व्यायाम से शरीर में चुस्ती स्फूर्ती आती है। शरीर में रक्त का संचालन उचित रूप से होता है। शरीर का हर अंग स्वस्थ और पुष्ट हो जाता है। खेल व्यायाम का एक मनोरंजक रूप हैं। जो आलस्य के कारण व्यायाम से कतराते हैं, वे भी खेलों में पूरी दिलचस्पी दिखाते हैं। हमें सुबह जल्दी उठकर प्रातः भ्रमण के लिए जाना चाहिए। किसी पार्क या खुले स्थान पर व्यायाम करना चाहिए। इससे बीमारियाँ और व्याधियाँ दूर होंगी और शरीर और मन स्वस्थ होंगे।

(छ) **मेरा जीवन लक्ष्य**- एक नाव को यदि यूँ ही सागर में छोड दिया जाए तो वह दिशाहीन हो भटकती रहती है। उसी प्रकार मनुष्य जीवन भी यदि दिशाहीन हो तो वह कहीं भी नहीं पहुँच पाता। अतः हम सबको जीवन में आगे बढ़ने के लिए लक्ष्य होना चाहिए मेरा एक लक्ष्य हैं डॉक्टर बनना। डॉक्टर बनकर मैं धन कमाने के साथ-साथ मानवता के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्ति भी कर पाउँगा। डॉक्टर बनने के लिए मुझे बहुत पढ़ना होगा और बहुत पैसे भी खर्च करने होगे। डॉक्टर जब प्रेमपूर्वक और नम्रता से रोगी से बात करता है तो आधी बीमारी तो खुद दूर हो जाती है। मैं चाहता हूँ कि डॉक्टर बनकर कुछ समय उन असहाय, और निर्धन लोगो को अर्पित करूँ जो जीवन में कभी अच्छी चिकित्सा नहीं करा पाते।

(ज) सिनेमा मनोरंजन का साधन है। यह लोगों में बहुत लोकप्रिय है। सिनेमा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का सबसे अच्छा माध्यम है। यह समाज का पूरा ढाँचा बदलने में समर्थ है। सिनेमा से हमें शिक्षा और जानकारी मिलती है। यह समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर कर सकता है। सिनेमा दहेज प्रथा, बाल विवाह, छुआ छूत, जैसी बुराइयों को दूर करके समाज में हिंदू-मुस्लिम एकता ला सकता हैं जैसे- पुरानी फिल्म 'दोस्ती' में दिखाया गया। लेकिन आजकल का सिनेमा जहर फैला रहा हैं। अधिक धन कमाने के लिए अश्लील फिल्में बन रही हैं जिससे युवावर्ग के चरित्र का पतन हो रहा हैं। आजकल हर युवक, युवती सिनेमा से प्रभावित हैं। वे अपनी पढ़ाई छोडकर फिल्में देखने में समय बर्बाद कर रहे हैं। इसलिए सरकार को ऐसी फिल्में बंद करनी चाहिए। उन्हें अच्छी और शिक्षाप्रद फिल्में बनाने वालो को प्रोत्साहन देना चाहिए।

(झ) **मेरे जीवन की आकांक्षा**- प्रत्येक व्यक्ति के मन में कुछ बनने की आकांक्षा होती हैं। मेरी तीव्र इच्छा अध्यापक बनने की हैं जिससे मैं समाज में शिक्षा का प्रसार कर सकूँ। मुझे पढ़ाई का बहुत शौक हैं और मैं शुरु से ही कक्षा में प्रथम आ रहा हूँ। अध्यापन एक उच्च स्तर की कला हैं। मैं अध्यापक बनकर विद्यार्थियों को ज्ञान देना और उन्हें चरित्रवान बनाना चाहता हूँ। हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राष्ट्रपति बनने से पहले अध्यापक थे उन्हीं की याद में 5 सिंतबर को अध्यापक दिवस मनाया जाता है। अध्यापक बनकर छात्रों को ज्ञान देने से मेरे मन को शांति और संतुष्टि मिलेगी।

(क) आपदा प्रबंधन

प्रकृति और मनुष्य का अनादि काल से घनिष्ठ संबंध रहा है। इसलिए प्रकृति को मानव की सहचरी कहा गया है। परंतु कभी-कभी प्रकृति कुपित होकर अपना प्रकोप दिखाती रहती हैं जैसे- बाढ़, भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी। इन प्राकृतिक आपदाओं के कारण जान-माल की बहुत हानि होती है। आज भी प्रकृति मनुष्य के नियंत्रण में नही हैं। कुछ समय पहले नेपाल में भूकंप आया जिसमें अनेक लोग मारे गये और लाखों लोग घायल हुए किसी दैवी विपत्ति के आने पर जो उपाय किए जाते हैं, उसी को आपदा प्रबंधन कहा जाता है। इस प्रकार के प्रबंधन आज के युग में अत्यावश्यक हैं क्योंकि इस प्रकार की आपदाएँ प्रायः आती रहती हैं। आपदा प्रबंधन के लिए विशेषज्ञों और अधिकारियों की एक टीम बनाई जाती है जो उस पर नियंत्रण पाने और लोगों को राहत दिलाने का प्रबंध करती है। आज प्रत्येक देश में ऐसी व्यवस्था है। भारत में भी इस प्रकार की व्यवस्था हैं।

(ख) समाचार पत्र

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु है। वह अपने आस-पास और देश- विदेश की घटनाओं से अवगत होना चाहता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है- 'समाचार पत्र'! समाचार पत्र आज के जीवन में अनिवार्य हो गया है। समाचार पत्र में खेल संसार, राजनीति फिल्मी दुनिया, कहानियाँ, कार्टून आदि अनेक चीजें होती हैं। ये हमारी ज्ञान वृद्धि करती हैं और साथ ही मनोरंजन भी। समाचार पत्र से नई-नई बातों की जानकारी मिलती है। ये

जनता और सरकार के बीच कड़ी का काम करते हैं। ये लोकतंत्र के सजग प्रहरी की भूमिका निभाते हैं। इनके द्वारा जनता अपने विचार सरकार तक पहुँचा सकती है, और सरकार अपनी योजनाओं की जानकारी जनता तक। समाचार पत्रों में तरह-तरह के विज्ञापन छपते हैं। जिनसे व्यापारियों को बहुत लाभ होता है। इनमें नौकरी और वैवाहिक विज्ञापन भी छपते हैं। इस प्रकार समाचार पत्र संसार के दर्पण कहे जा सकते हैं।

(ग) विद्यार्थी और अनुशासन

विद्यार्थी शब्द विद्या और अर्थी दो शब्दों से बना हैं। विद्यार्थी - विद्या+अर्थी अर्थात विदया को चाहने वाला। विद्यार्थी जीवन में शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन का बहुत महत्व हैं। लेकिन वर्तमान स्थिति इसके विपरीत है। छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई का मूल्यवान समय नष्ट करके हड़ताल और तोड़ फोड़ करते हैं। वे विद्या प्राप्ति के लक्ष्य से भ्रष्ट होकर अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते। इसका मुख्य कारण है आजकल का वातावरण। प्राचीन काल में विद्यार्थी माता-पिता व गुरू का आदर करते थे। आजकल वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं और अपने भविष्य को नष्ट करते हैं। विद्यार्थी का मुख्य लक्ष्य अध्ययन करके अपने भविष्य का निर्माण करना है। परंतु पश्चिम सभ्यता के प्रभाव और फैशन के कारण विद्यार्थी अनुशासनहीन हो गए हैं। इसलिए शिक्षकों और अभिभावकों को विद्यार्थी में अच्छे संस्कार पल्लवित करने का प्रयास करना चाहिए इसमें सबसे बड़ी भूमिका माता-पिता ही निभा सकते हैं घर में अनुशासन बनाए रखें।

पाठ 25 संवाद लेखन

(1) (क) दो या दो से अधिक लोगों का आपस में बातचीत करना संवाद कहलाता है।

(ख) दो लोगों की बातचीत को जब हम यथावत लिखकर दूसरों के सामने प्रस्तुत करते हैं तो उसे संवाद लेखन कहते हैं।

संवाद लेखन में नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- संवाद छोटे और रोचक होने चाहिए।
- संवाद सरल भाषा में होने चाहिए।
- संवाद विषयानुकूल होना चाहिए।
- संवाद में यथास्थान मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी करना चाहिए।

(2) शर्मा जी- नमस्ते वर्मा जी! कैसे हैं?

वर्मा जी- नमस्ते, मैं ठीक हूँ। अपना हाल सुनाइये।

शर्मा जी- मैं भी ठीक हूँ। बाज़ार से सामान लेने आया हूँ।

वर्मा जी- मै भी इसीलिए आया हूँ। हर चीज़ की कीमत बहुत बढ़ गई है।

शर्मा जी- मँहगाई ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है।

वर्मा जी- हाँ शर्मा जी, अमीर आदमी तो महँगाई की मार सह लेता है परंतु गरीब व्यक्ति इससे बिल्कुल दब जाता है।

शर्मा जी- लगता है मोदी सरकार महँगाई कम करने का कुछ प्रयास करेगी।

वर्मा जी- आपने बिल्कुल ठीक कहा शर्मा जी। आज सारी जनता यही आशा लिए बैठी है।

(3) पिता - बेटा, आज क्रिकेट मैच कैसा चल रहा है?

पुत्र - पिता जी, भारत पाकिस्तान से आगे है।

पिता - इस समय भारत का स्कोर क्या है?

पुत्र - इस समय भारत का स्कोर 357 है। उसके पाँच विकेट गिर गए हैं।

पिता - किस खिलाड़ी का प्रदर्शन अच्छा रहा?

पुत्र - आज विराट कोहली ने शतक बनाया।

पिता - इससे लगता है भारत के जीतने की आशा है।

पुत्र - जी, पिता जी! आशा है इस मैच को हम जीतेंगे।

(4) रोगी – नमस्ते डॉक्टर साहब।
डॉक्टर – हाँ! बताओ क्या बीमारी है?
रोगी – डॉक्टर साहब, मुझे अपच की शिकायत है। खाने के बाद पेट में भारीपन रहता है।
डॉक्टर – ठीक है, मैं दवा लिख रहा हूँ। उसे समय से लेना लेकिन परहेज जरूरी है।
रोगी – ठीक है डॉक्टर साहब।
डॉक्टर – तुम्हें तली भुनी चीजें अधिक नहीं खानी। हल्का सुपाच्य खाना खाना है।
रोगी – जी डॉक्टर साहब।

(5) अध्यापक:– आजकल की परीक्षा प्रणाली के विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं?
छात्र – जी, आजकल की परीक्षा प्रणाली पुराने समय से कुछ बेहतर है परंतु अभी भी छात्र रटने पर जोर देते हैं।
अध्यापक – रटने के स्थान पर विषय को समझने से कठिन विषय भी सरल लगता है।
छात्र – सर वह ठीक है। लेकिन ऐसे बहुत छात्र हैं जो विषय को समझने के स्थान पर रटने की कोशिश करते हैं।
अध्यापक – तुम लोग परीक्षा प्रणाली में क्या सुधार चाहते हो?
छात्र – जी, सबसे पहले तो पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत नहीं होना चाहिए। यह इतना हो जिसको छात्र अच्छी तरह समझ व पढ़ सके। उनकी बुद्धि पर अनावश्यक बोझ न पड़े।
अध्यापक – ठीक है।
छात्र – जी, पुस्तकों में कठिन विषयों को इस रूप में लिंखा जाए कि छात्रों का मन लगे। भाषा बिल्कुल सरल हो।
अध्यापक – तुम लोगो के सुझाव अच्छे हैं। आशा है धीरे–धीरे परीक्षा प्रणाली में और सुधार होंगे।

(6) गीता – अरे राधिका! बहुत दिन बाद मिली।
राधिका – हाँ, दीपावली आने वाली है, उसी की तैयारी कर रही थी।
गीता – हाँ, मैं भी आजकल दीपावली के लिए खरीदारी कर रही हूँ।
राधिका – दीपावली के महत्व के विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं?
गीता – दीपावली हिंदुओ का सबसे प्रिय त्योहार है। यह श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वापस आने के कारण मनाया जाता है।
राधिका – हाँ। इस दिन लोगों ने दीए जलाकर अपनी खुशी जताई थी।
गीता – हाँ, और ऐसा मानते हैं कि इस दिन घर लक्ष्मी आती हैं।
राधिका – बिल्कुल ठीक! इसलिए लोग घर को साफ–सुथरा करके सजाते हैं।
गीता – हाँ, साफ घर में लक्ष्मी का वास होता है।
राधिका – अच्छा चलूँ मैं भी घर की अच्छी तरह सफाई कर लूँ।
गीता – ठीक है, फिर मिलेंगे दीपावली के दिन।

पाठ 26 निबंध लेखन

(1) (क) **हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी** – प्रत्येक स्वाधीन देश के कुछ राष्ट्रीय प्रतीक होते हैं जैसे– उसका संविधान, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रभाषा आदि। इन प्रतीकों का देश के निवासी सम्मान करते हैं। इन्हीं से उस देश की पहचान होती हैं।

भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है। भारत में 14 सितंबर 1949 को हिंदी को 'राष्ट्रभाषा' के रूप में स्वीकृति मिली। राष्ट्रभाषा का अर्थ है वह भाषा जिसका प्रयोग किसी राष्ट्र के अधिकांश लोग करते हैं। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई हैं। परंतु हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त है। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक हिंदी समझी और बोली जाती है। यह विश्व में

सबसे अधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। भारत के अधिकांश लोग इसी के माध्यम से अपने समस्त कार्य करते हैं। भारत के अधिक से अधिक राज्यों में हिंदी को राजभाषा के रूप में, पंजाब, गुजरात, तथा महाराष्ट्र में द्वितीय भाषा के रूप में और शेष राज्यों में संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जा रहा हैं। हिंदी का साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसे सीखना भी अत्यंत सरल है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक देशों में इसके पठन-पाठन की सुविधा उपलब्ध हैं। फिर भी आज स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी का बोल बाला है, जो हमारी मानसिक दासता का प्रतीक है।

(ख) **भ्रष्टाचार**- "भ्रष्टाचार" दो शब्दों के मेल से बना है भ्रष्ट + आचार। जब कोई व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ या इर्ष्या के कारण कोई अनुचित कार्य करता है, तो उसे भ्रष्टाचार कहा जाता है। आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया हैं। आज हमारे देश में चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है जिसके कारण अनेक बुराईयाँ पनप रही हैं। इससे समाज का नैतिक पतन हो रहा हैं। आज व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक धन प्राप्त करना चाहता है।

वह ऐशो-आराम का जीवन बिताना चाहता हैं। अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिए वह आमदनी के भ्रष्ट तरीके अपनाता हैं। गरीबी, बेरोजगारी और महँगाई भी भ्रष्टाचार के अन्य कारण हैं। आज रिश्वत लेना, मिलावट करना, चोर बाज़ारी, काला बाज़ारी, भाई-भतीजावाद सभी क्षेत्रों में देखी जा सकती हैं। भ्रष्टाचार के कारण नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा हैं। भारतीय समाज पतन के गर्त में गिर रहा है। हमें समाज में फन फैला रहे भ्रष्टाचार रूपी विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक हैं प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। अत: आवश्यकता इस बात की हैं कि शिक्षक देश की भावी पीढ़ी को एक ईमानदार नागरिक के रूप में तैयार करें। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा। सामान्यजन को आवश्यक सुविधाएँ भी सुलभ कराना होगा। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा ताकि भ्रष्टाचार की काली छाया का विनाश कर सकें।

(ग) **मेरी प्रिय पुस्तक**- मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। मैंने अनेक पुस्तकें पढ़ी हैं परंतु मेरी प्रिय पुस्तक भगवत् गीता हैं। इसे महर्षि वेदव्यास ने लिखा हैं। यद्यपि रामायण और महाभारत पुस्तकें भी मेंरी प्रिय हैं तथापि भगवत् गीता ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया हैं। जब महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने अपने परिजन कौरवों से युद्ध करने से मना कर दिया तब श्री कृष्ण ने उसे उपदेश दिया- अर्जुन तुम अपना कर्तव्य करो। आत्मा अमर है, यह कभी नहीं मरती। अपना कर्तव्य करने से आत्मा का यश बढ़ता हैं। यह सुनकर अर्जुन ने अपने हथियार उठा लिए। उसने कौरव सेना से युद्ध किया और पांडव विजयी रहे। गीता में कर्म करने पर बल दिया गया हैं। 'कर्मग्येव अधिकारस्ते मा कलेशु कदाचन' अथार्त् कर्म करने का ही हमारा कर्तव्य है, फल की इच्छा करना नहीं हमें सद्मार्ग पर चलना चाहिए। बुरी सोच और बुरी भावनाओ को त्यागकर हमें योगी के समान जीवन बिताना चाहिए। भगवत् गीता केवल एक धर्म के लिए नही है अपितु यह संपूर्ण मानव जाति का उद्धार करने वाली पुस्तक हैं। इसमे कहा गया है कि हमारा लक्ष्य हैं- परमात्मा की प्राप्ति। इसलिए हमें बुराइयों को छोड़कर अच्छे और सच्चे मार्ग पर चलना चाहिए।

(घ) पिछले ग्रीष्मवकाश में मैनें जलंधार से शिमला की रेल यात्रा की। मेरे माता-पिता मेरे साथ थे। मेरे बड़े भाई ने हमें शिमला घूमने के लिए बुलाया था। मैं शिमला के मनमोहक दृश्यों को देखना चाहता था। हमने अपना सामान बाँधा और रेलवे स्टेशन पहुँच गए। प्लेटफार्म पर बहुत भीड़ थी। सब लोग रेलगाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ लोग खड़े थे, कुछ बैंचो पर बैठे थे। वहाँ पत्रिकाएँ समाचार-पत्र और खाने-पीने की वस्तुएँ बिक रही थीं। गाड़ी के आते ही हम अपने कंपार्टमेंट में पहुँच गए। मुझे खिड़की के पास एक आरामदायक सीट मिल गई। गाड़ी में कई राज्य से आए लोग थे। सभी धर्मों और जातियों के लोग एक साथ सफर कर रहे थे।

कुछ लोग बोलने में बहुत नम्र थे परंतु कुछ उग्र स्वभाव के थे। गाड़ी समय पर चल पड़ी। मैं खिड़की से बाहर झाँकने लगा। बाहर हरे भरे खेत बहुत सुंदर लग रहे थे। गाड़ी पहले लुधियाना फिर अंबाला पहुँची वहाँ हमने रात का खाना खाया। हम कालका स्टेशन से होते हुए शिमला पहुँच गए। वहाँ पहाड़ों के दृश्य बहुत मनोहर थे। मेरा भाई हमें स्टेशन पर लेने आया हुआ था। हम लोग शिमला में एक सप्ताह रहे और फिर वापस चले आए।

(ङ) **राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी**– महात्मा गाँधी को भारत का राष्ट्रपिता कहा जाता है। उनका जन्म 2अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ था। उनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचंद गाँधी था। गाँधी जी स्कूल की शिक्षा समाप्त करके कानून की पढ़ाई करने के लिए लंदन चले गए। वह एक अच्छे वकील बनना चाहते थे। वकालत पढ़कर गाँधी जी भारत आ गए। उन्हें वकालत के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ काले गोरे के भेद भाव में वह बहुत दुखी हुए। उन्होनें वकालत छोड़ दी और भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य करने लगे। वह भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराना चाहते थे। गाँधी जी ने 1919 में असहयोग आंदोलन चलाया। वह कई बार जेल भी गए। 1942 में उन्होने भारत छोड़ो आंदोलन चलाया। गाँधी जी के अथक प्रयासों से भारत को 1947 में स्वतंत्रता मिल गई। महात्मा गाँधी सादगी प्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा पर बल दिया। वह हिंदु–मुस्लिम एकता चाहते थे। वह खादी के वस्त्र पहनने के पक्ष में थे। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने गाँधी जी को गोली मार दी। अहिंसा का पुजारी स्वयं हिंसा का शिकार हो गया। सारे संसार में उनकी मृत्यु का शोक मनाया गया। गाँधी जी आज हमारे बीच नही है। लेकिन उनके बताए हुए आदर्शों पर चलना हमारा कर्तव्य हैं।

(ङ) **भारत की ऋतुएँ**– भारत में पूरे वर्ष में छः ऋतुएँ आती हैं– ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत और वसंत। इन सब ऋतुओं का अपना महत्व हैं परंतु इनमें चार ऋतुएँ मुख्य हैं। ग्रीष्म ऋतु अप्रैल से अक्तूबर तक चलती है। जून का महीना सबसे गरम होता है। इस ऋतु में लू चलती है। मनुष्य और जीव जंतु गरमी से बेहाल हो जाते हैं। लोग पंखे और वातानुकूलित कमरों में बैठते हैं। वे शीतल पेयों का सेवन करके गरमी से राहत पाते हैं। धरती की तपन को शांत करने वर्षा ऋतु आती है। वर्षा न होने से फसलें नष्ट हो जाती हैं। अधिक वर्षा होने पर बाढ़ आने का भय रहता है। वर्षा की फुहारे बच्चों और युवा वर्ग को बहुत भाती हैं। शरद ऋतु नवंबर से फरवरी तक रहती है। इसमें शरद हवाएँ चलती हैं। जनवरी का महीना सबसे ठंडा होता हैं। लोग घरों में रजाइयों और कंबलों में दुबके रहते हैं। वें गरम कपड़े पहनकर और गरम खाना और गरम पेय पीकर सरदी से राहत पाते हैं। वसंत ऋतु को ऋतुराज कहते हैं सरदी समाप्त होते ही 15 फरवरी से इस ऋतु का आगमन होने लगता हैं। यह 15 अप्रैल तक चलती है। इस ऋतु में मौसम बहुत सुहावना होता है। यह सब ऋतुएँ श्रेष्ठ हैं।

(2) (क) **दिल्ली मैट्रो**– जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं ने जन्म लिया है जिनमें परिवहन व्यवस्था की समस्या भी एक है। महानगरों में सड़कों पर दौड़ते वाहनों के कारण वातावरण अत्यंत प्रदूषित हो जाता हैं। लोगो को साँस लेने के लिए शुद्ध वायु नहीं मिल पाती हैं और अनेक प्रकार के रोग फैलते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए मेट्रो रेल का आरंभ करना आवश्क हो गया। सर्वप्रथम कोलकाता में मेट्रो रेल सेवा प्रारंभ की गई थी। अब दिल्ली में भी इसका आरंभ हो गया है। 24 दिसंबर 2002 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इस सेवा का शुभारंभ किया। आज दिल्ली में शहादरा, केंद्रीय सचिवालय, कनाट प्लेस, नोएडा, गुरुग्राम आदि तक के लिए मेट्रो सेवाएँ उपलब्ध हैं। मैट्रो रेल पूरी तरह वातानुकुलित तथा स्वचालित हैं। कुछ भाग तो भूमिगत हैं। इस रेल सेवा से प्रदूषण पर बहुत अंकुश लगा हैं। सड़कों पर भीड़ भाड़ भी कम हो गई है। इससे दिल्ली में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने में समय

की बचत होती है। मेट्रो रेल दिल्ली की शान है। इसे देखकर हमारे देश की प्रगति का नमूना मिल जाता हैं। महानगर के जीवन के लिए मैट्रो रेल बहुत सुविधाजनक तथा उपयोगी है। आजकल इसमें स्मार्ट कार्ड की भी व्यवस्था हैं। दैनिक यात्रा कर सकते हैं। निकट भविष्य में मेट्रो रेल का आंरभ और मार्गो पर करने की योजना हैं।

(ख) **पहला सुख नीरोगी काया**- विद्वानों का कहना हैं कि हमें सर्वप्रथम शरीर की सुरक्षा करनी चाहिए। यदि शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो मनुष्य कोई भी शारीरिक या मानसिक कार्य नहीं कर सकता। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है। व्यायाम अनेक प्रकार के होते है। प्रात: काल जल्दी उठकर घूमने से हमारे शरीर में नए रक्त का संचार होता है। जो लोग किन्ही कारणों से प्रात: घूमने नहीं जा सकते हैं। आजकल दूरदर्शन पर भी कसरतों और योग की शिक्षा दी जाती हैं। लोग इन्हें देखकर भी अभ्यास कर सकते है। तरह-तरह के खेल भी व्यायाम के ही अंतर्गत आ जाते हैं खेल मनोरंजन का भी सशक्त साधन हैं। प्रतिदिन स्नान करना भी अति आवश्यक है। स्वच्छ ठंडे पानी से रगड़कर शरीर को साफ करने से शरीर की त्वचा के छिद्र खुल जाते हैं। व्यायाम की तरह शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित और पौष्टिक भोजन भी आवश्यक है। भोजन समय पर करना चाहिए। खाने में सभी आवश्यक तत्व होने चाहिए। बढ़ते बच्चों के लिए प्रोटीन अनिवार्य हैं। खाने में अधिक तली भूनी चीज़ें नहीं खानी चाहिए। ये मोटापा और बीमारियों को आमंत्रण देती हैं। हमें दिनभर में 8-10 गिलास पानी अवश्य पीना चाहिए। इससे शरीर की सफाई होती रहती है और अनावश्यक पदार्थ बाहर निकलते रहते हैं। शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो मनुष्य कोई भी कार्य ढंग से नहीं कर पाएगा। जो अपने शरीर की उपेक्षा करता है, वह अपने लिए बुढ़ापे और मृत्यु के द्वार खोलता है। आज के समाज में जो भयानक रोग दिखाई देते हैं उनका मुख्य कारण व्यक्ति का अपने स्वास्थ के प्रति ध्यान न देना हैं। शरीर स्वस्थ रहेगा तो मन भी प्रसन्न रहेगा। हम हर काम आनंद व स्फूर्ति से कर सकेंगे। स्वास्थ्य शरीर के लिए हमें अपनी दिनचर्या को नियमित करना चाहिए। हर काम समय पर करना चाहिए। सुबह जल्दी उठना, समय पर भोजन और व्यायाम करना, समय पर सोना आवश्यक हैं। नियमित जीवन पौष्टिक भोजन और व्यायाम स्वास्थ्य के लिए रामबाण औषधि हैं।

(ग) **इक्कीसंवी सदी का भारत**- भारत का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसकी संस्कृति बहुत पुरानी है। हमें भारत के साहित्य पर गर्व है। इसके प्राचीन ग्रंथ वेद, पुराण, उपनिषेद, भगवत् गीता, रामायण, आदि हैं। इन पुस्तकों का बहुत महत्व हैं। भारत में अनेक संत, महात्मा और महापुरुष हुए हैं जिन्होंने प्रेम और शांति का पाठ पढ़ाया। हमारा भारत प्राचीन काल में सोने की चिड़िया कहलाता था। यहाँ नदियों, वन, झीलें, पर्वत और खेतों के रूप में प्राकृतिक संपदा विद्यमान है। यहाँ लकड़ी, फल, खनिज़ और जड़ी बूटियाँ बहुतायत में हैं। अंग्रेज़ों ने भारत पर कई वर्षो तक राज किया। उन्होंने हमारी प्राकृतिक संपदाओं से लाभ उठाया। भारत से कच्चा माल ले जाकर वे ब्रिटेन में सामान बनाते थे। फिर उस सामान को भारत में बेचकर धन कमाते थे। इस प्रकार अंग्रेजों ने भारत को बहुत लूटा। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। यहाँ नया संविधान बना और प्रजातंत्र की स्थापना की गई देश के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गई। गरीबी दूर करने और लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठाने का प्रयत्न किया गया। इसके फलस्वरूप भारत में सामाजिक और आर्थिक प्रगति हुई। आज भारत इक्कीसवीं सदी में हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति हो रही है। खेतीबाड़ी में नई तकनीक ने बहुत सुधार किए हैं। नई फैक्ट्रियाँ और मिले खुल गई हैं। देश का औद्योगिक विकास हो रहा हैं। परमाणु शक्ति के सदुपयोग के लिए खोज़ हो रही हैं। आर्यभट्ट सैटेलाइट भारत की विशेष उपलब्धि हैं। किसानों और प्रौढ़ शिक्षा पर बल दिया जा रहा हैं। शिक्षा प्रणाली में सुधार हो रहा है। ताकि युवावर्ग को आसानी से रोजगार मिल सके। चिकित्सा के क्षेत्र में भी नए-नए

प्रयोग हो रहे हैं। नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के कंधों से कंधा मिला कर चल रही है। विज्ञान ने अनेक सुख सुविधाएँ दी हैं जिससे जीवन सुगम हो गया है। इतना ही नहीं निकट भविष्य में विकास की बहुत आशाएँ हैं। वह दिन दूर नहीं जब भारत प्रगति पथ पर आगे बढ़ता हुआ पूरे संसार में शिखर पर होगा।

पाठ 27 डायरी लेखन

(1) 18 मार्च, 20.....

आज मैं और मेरा मित्र राहुल चिड़ियाघर घूमने गए। वहाँ हमने रंग बिरंगे पक्षी देखे। वहाँ कुछ ऐसे पक्षी भी देखे जो अब तक हमने नहीं देखे थे। उनके सुंदर और रंगीन पंख आकर्षक थे। वहाँ हमने बंदर देखे जो हमारी नकल कर रहे थे। लोग उन्हें भूजे चने, मूँगफली, व केले खाने को दे रहे थे। आगे हमने पिंजरे में शेर देखा जो माँस खा रहा था। हमने लोमडी, ऊँट, गधे, गैंड़े, आदि, भी देखे। तालाब में सुंदर मछलियों को देखकर हम हैरान रह गए। पशु-पक्षियों की दुनिया में खोकर हमारा दिन कैसे बीत गया पता ही न चला।

(2) 19 मार्च, 20.....

कल मैं और कुछ दोस्त आगरा गए। वहाँ हमने ताजमहल देखा। ताजमहल की सुंदरता देखकर हम आश्चर्य चकित रह गए। संगमरमर से बने ताजमहल को प्राकृतिक सौंदर्य और निखार रहा था। अंदर हमने शाहजहाँ और उनकी बेगम मुमताज महल की कब्रें देखी। आस पास की दीवारें रंगीन काँच के टुकड़ों से सजी थीं। उस दिन चाँदनी रात थी इसलिए ताजमहल के सौंदर्य में चार चाँद लगे थे। ताजमहल कला का सुंदर नमूना है। ताजमहल के अदभुत सौंदर्य की छाप मन में लिए हम वापस आ गए।

(3) 19 मार्च, 20.....

दिल्ली की शान निराली है। यहाँ स्कूल, कॉलेज, सिनेमा हॉल, मंदिर, कोर्ट आदि की बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। चाँदनी चौक, करोल बाग, कनॉट प्लेस, सरोजनी नगर आदि बाज़ार लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। टेस्ट मैचों के होने पर दर्शकों की भारी भीड़ होती है। यहाँ यातायात के हर प्रकार के साधन उपलब्ध हैं जिनमें मेट्रो रेल भी उपलब्ध हैं। सड़कों पर सारा दिन बसों, कारों, और स्कूटरों का आवागमन रहता हैं। इस कारण शहर में प्रदूषण अधिक है। रहने के लिए बड़ी-बड़ी कालोनियाँ हैं। यहाँ हर प्रकार की सुख सुविधाएँ होते हुए भी आम आदमी तनाव से ग्रस्त हैं।

(4) 19 मार्च, 20.....

आज अभिनव का जन्मदिन था। हमारी सारी मित्र मंडली उसके घर पर एकत्र हुई। पार्टी शाम 7 बजे से आंरभ हुई। हमने खूब मौज मस्ती की। खाने पीने और नृत्य का कार्यक्रम रात 10 बजे तक चलता रहा। अभिनव ने केक काटा। उसके कुछ निकट संबंधी भी आए हुए थे। अभिनव के मम्मी-पापा ने उसे मोबाइल फोन उपहार के रूप में दिया। हम सब मित्रों ने भी उसे अपनी शुभकामनाएँ और उपहार दिए।

पाठ. 28 और 29 छात्र स्वयं करें।

प्रश्न पत्र 1

(1) (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

(2) परम + आलय हिम + आलय बाग + ईश

(3) मोर नाक कविता नाच मक्खी भौंरा

(4) चठाई, पढ़ाई, लड़ाई
बनाया, खिलाया, पकाया
घबराहट, चिल्लाहट, मुस्कुराहट

(5) (क) आपबीती – तत्पुरुष
(ख) सत्याग्रह – तत्पुरुष

(ग) ब्रिफला – द्विगु
(घ) चंद्रमुखी – कर्मधारय
(ङ) लाभ–हानि – द्वंद्व

(6) अधिकय अपनापन अहंकार कमाई नारीत्व हँसी

(7) रानी गाय दादा नर मूर्ख श्रीमती

(8) प्राण, हस्ताक्षर, आँसू, दर्शन

(9) (क) कर्ता (ख) संबंध (ग) करण (घ) संप्रदान

(10) किसी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(11) पुरुषवचाक सर्वनाम – मैं, तुम, आदि। निश्चयवचाक सर्वनाम – ये, वे
अनिश्चयवाचाक सर्वनाम – कोई, कुथ सबंधंवाचक सर्वनाम – जो–वह, जैसा–वैसा
प्रश्नवाचक सर्वनाम – कौन, क्या निश्चयवचाक सर्वनाम – खुद, स्वयं

(12) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना, समास कहलाता है।

(13) जो शब्दांश किसी शब्द के आगे जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषण उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

(14) संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ उसका संबंध जाना जाए, उसे कारक कहते है।

प्रश्न पत्र 2

(1)

विशेषण	**विशेष्य**
बनारसी	साड़ी
तीसरा	घर
दो किलो	आम
थोड़ी	दाल

(2) (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) अकर्मक (घ) अकर्मक

(3) (क) वर्तमान (ख) भविष्यत् काल (ग) भूतकाल (घ) भविष्यत् काल

(4) (क) धीरे–धीरे (ख) अवश्य (ग) अचानक (घ) दिनभर

(5) (क) भर (ख) भी (ग) तो ही (घ) ही (ङ) तो

(6) भागीरथी, जाह्नवी, सुरसरिता
चाँद, चंद्र, शशांक घरा, वसुधा, माही समुद्र, सिंधु, रत्नाकर

(7) 72–सी, रामनगर
दिल्ली,
प्रिय रमन
नमस्कार
मै यहाँ पर सकुशल हूँ और ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की प्रार्थना करता हूँ। मित्र मैं जानता हूँ कि इस महीने अगस्त की 25 तारीख को तुम्हारा जन्मदिन है। तुम विदेश में रहते हो इसलिए तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी में शामिल होना तो संभव नहीं है। मैं पत्र द्वारा ही तुम्हें बधाई दे रहा हूँ। ईश्वर तुम्हें लंबी उम्र दें।
चाचा–चाची को चरण–स्पर्श कहना।
तुम्हारा मित्र
विश्वास त्यागी

(8) परिश्रम के बिना सफलत नहीं
परिश्रम आदमी के भीतर का वह अनूठा गुण है जो उसे जीवन में सफलता तथा सुख प्रदान करता है। परिश्रम के बिना भाग्य काम नहीं करता, क्योंकि भाग्य परिश्रम से ही बनता है। जब व्यक्ति परिश्रम करके पसीना बहाता है, तब भाग्य सौभाग्य बन जाता है तथा जीवन में अच्छे दिन अपने आप चले आते हैं। भाग्य के भरोसे बैठकर बिना परिश्रम के सफलता की प्रतीक्षा करने वाले लोग अक्सर पश्चाताप करते ही दिखाई देते हैं। इसलिए यह कहना बिल्कुल उचित है कि परिश्रम के बिना सफलता कभी नहीं मिलती।